राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष : 32 अंक : 4 अगस्त – सितम्बर 2009

60

ABVP
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
ज्ञान • शील • एकता
1949-2009

एक आन्दोलन देश के लिए

घर घर में दीपावली हो
यही संकल्प हमारा....

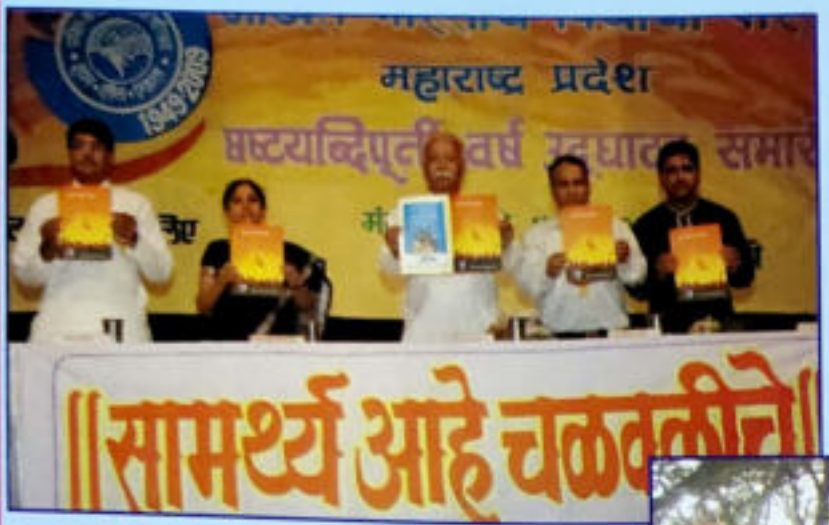

Shri Mohan Bhagwat releasi souvenir at the inaugural function of ABVP 60 years a Pune, Maharashtra

ABVP activists celebrating victory at Hyderabad central University after the election

Film director Major Ravi inaugurating Guruvayoorappan College union at Kozhikkode, Kerala

DUSU Vice President Ku.Kriti Vadera celebrating her victory

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका
वर्ष : 32 अंक : 4 • अगस्त – सितम्बर 2009

संरक्षक
अतुल कोठारी

संपादक
डा. मुकेश अग्रवाल

प्रबंध संपादक
नितिन शर्मा

संपादक मंडल
संजीव कुमार सिन्हा
आशीष कुमार 'अंशु'
उमाशंकर मिश्र

फोन : 011 – 23093238 , 27662477
E-mail : chhathrashakti@gmail.com
Website : www.abvp.org

डा. रंजीत ठाकुर द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, बी–50, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, दिल्ली–110007 के लिए प्रकाशित एवं मुद्रक प्रेस, 119, डीएसआईडीसी कॉम्प्लेक्स, ओखला, फेज–1, नई दिल्ली–20 द्वारा मुद्रित

"राष्ट्रीय छात्रशक्ति" की ओर से सभी पाठकों एवं देशवासियों को *दीपावली* की हार्दिक शुभकामनाएँ।

विषय सूची

7 एक आंदोलन देश के लिए

11 घर घर में दीपावली हो.... यही संकल्प हमारा....

13 मुलाकात
श्री दत्तात्रेय होसबाले

17 India & China:
Talk Peace For Mutual Benefit

21 शैक्षिक परिवर्तन : आगामी दिशा एवं योजना

23 कैरियर

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखकों के हैं। सम्पादक, प्रकाशक, एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

परिषद् के साठ साल, एक आंदोलन देश के लिए

पुस्तक परिचय

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 60 साल पूर्ण होने के शुभ अवसर पर श्री.सुनील आंबेकर द्वारा एक पुस्तिका 'एक आंदोलन देश के लिए' तैयार की गई। इस पुस्तिका से गुजरते हुए एक सुखद आश्चर्य होता है। लगभग 40 पृष्ठों में पिछले 60 वर्षों में विद्यार्थी परिषद् की तमाम महत्वपूर्ण गतिविधियों को यह पुस्तक समेटकर गागर में सागर भरने का काम करती है। इस पुस्तक की प्रस्तावना में विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिलिन्द मराठे लिखते हैं, 'क्या किया अभाविप ने इन छह दशकों में, इसका यह एक मूल्याकन है।'

श्री मराठे बताते हैं, 'अभाविप के छह दशक शैक्षिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर किया लोक जागरण, लोक शिक्षण और लोक संघर्ष का यह एक लेखा–जोखा है।

पुस्तिका में विद्यार्थी परिषद् से जुड़े संस्मरण, संघर्ष कथा, प्रयास, इतिहास क्रम, प्रारंभिक काल की गतिविधियां, उपलब्धियां और बहुत कुछ है। जब आप इस पुस्तिका को पढ़ रहे होंगे, आप महसूस करेंगे कि विद्यार्थी परिषद् के शिशु से किशोर और किशोर से युवा होने की पूरी कहानी इस पुस्तिका में दर्ज है।

श्री आंबेकरजी ने इस पुस्तिका में आन्ध्र प्रदेश के काकतिया विश्वविद्यालय की एक घटना का उल्लेख किया है। जिसे पढ़ने के बाद किसी भी परिषद् के कार्यकर्ता का सिर गर्व से ऊंचा हो जाएगा। घटना यूं है कि काकतिया विश्वविद्यालय जिसे नक्सलियों द्वारा कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय कहकर प्रचारित किया जा रहा था। वहां नक्सली प्रतिवर्ष 26 जनवरी और 15 अगस्त को तिरंगा ना लहराने के लिए धमकी देते थे और वे उस तारीख को काला झंडा लहराते थे। उनकी दहशत इतनी थी कि कोई विरोध नहीं करता था। 26 जनवरी 1982 को विद्यार्थी परिषद् कार्यकर्ता एस.जगन मोहन रेड्डी और उसके साथी इस राष्ट्र विरोधी कार्य के खिलाफ उठ खड़े हुए। संख्या में कम और शस्त्रहीन होने के बावजूद उन्होंने नक्सलियों का विरोध और तिरंगा का सम्मान करने का संकल्प लिया।

तिरंगा लगाने के बाद उस दिन नक्सलियों ने आकर मार–पीट की। तिरंगे को फाड़कर काला झंडा लगाया। उनकी धमकियों के बाद भी जगनमोहन रेड्डी ने तिरंगा लहराया और संबंधित थाने में अपनी आपत्ति दर्ज की। मामला न्यायालय में पहुंचा। नक्सलियों ने न्यायालय में साक्ष्य देने पर जान से मारने की धमकी दी। लेकिन रेड्डी परिषद के कार्यकर्ता थे, इसलिए निर्भय रहे, साहस से काम लिया। देश के लिए बलिदान होने के लिए तैयार हो गए। लेकिन पिछे हटने को तैयार नहीं हुए। न्यायालय के लिए जाते समय उनकी बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी गई।

इस तरह की कई कथाएं और उपकथाएं आपको इस पुस्तिका में मिलेगी जो देश के सम्मान हेतु लड़ने के लिए छात्रों को प्रेरित करती है। यह पुस्तिका वास्तव में विद्यार्थी परिषद् को जानने का एक अवसर छात्रों को मुहैया कराती है। कम शब्दों में कहना हो तो इस पुस्तिका को विद्यार्थी परिषद् के नए कार्यकर्ता संगठन को जानने–बूझने के लिए एक अनिवार्य पुस्तिका समझें। ■

एक आंदोलन देश के लिए

प्रा. मिलिंद मराठे
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, अभाविप)

9 जुलाई 1949.....
यह वह दिन है जब "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का विधिवत पंजीकरण हुआ और उसका पंजियन क्रमांक है– 'एस./385, 1949–50, दिल्ली। इसलिए अभाविप का स्थापना दिवस है 9 जुलाई।
1949–2009.....
निरंतर सक्रियता के 60 स्वर्णिम वर्ष पूर्ण हो रहे है। क्या किया इन 60 वर्षों में अभाविप ने? उपलब्धियाँ कौन सी है? ऐसे प्रश्न मन में आते है।

"एक आंदोलन देश के लिए" एक ही वाक्य से अभाविप का वर्णन हो सकता है। आदर्श छात्र आंदोलन का तत्वज्ञान अभाविप ने गत साठ वर्षों में विशद किया और उसको सप्रमाण सिद्ध करके दिखाया। इस देश की सर्वांगीण प्रगति होनी चाहिए। यह उद्देश्य अभाविप ने रखा। इस राष्ट्र पुनर्निर्माण हेतु संस्कारित छात्र शक्ति का निर्माण करना यह संकल्प व्यक्त किया यह संस्कारित, राष्ट्रभाव से ओतप्रोत और समाज के प्रति अपने को जवाबदेह मानने वाली जिम्मेवार छात्र शक्ति ही देश के परिवर्तन की प्रक्रिया को गतिमान बनायेगी यह विश्वास अभाविप ने संजोया। अभाविप ने कहा व्यक्ति परिवर्तन ही चिरस्थायी समाज परिवर्तन का एकमात्र शाश्वत मार्ग है और छात्र उस परिवर्तन का अग्रदूत है। छात्र कल का नहीं आज का नागरिक है और इसलिए शैक्षिक परिवर्तन के साथ सामाजिक, राष्ट्रीय, आर्थिक समस्याओं को हल करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है ओर वे सभी समस्याओं को सुलझाने हेतु प्रयास करना यह छात्र की जिम्मेवारी है। किसी भी शाश्वत विकास का मार्ग केवल संघर्ष से ही नहीं अपितु समन्वय के माध्यम से भी प्राप्त होता है इस दृढ विश्वास के कारण अभाविप ने शैक्षिक परिवार की संकल्पना रखी और वह आज स्वीकृत हुआ। संघर्ष भी रचनात्मक दृष्टिकोण से करना चहिए और भावात्मक, Constructive विचार ही सभी activities के मूल में होना चाहिए यह विचार अभाविप ने छात्र, युवाओं के बीच बोया। यह सभी गतिविधियाँ दलगत राजनीति के क्षुद्र विचारों से ऊपर उठकर करनी चाहिए और यह पूर्णतः संभव हैं ऐसी शास्त्र शुद्ध (Scientific) रचना (विद्यार्थी संगठन की) अभाविप ने समाज के सम्मुख रखी। आज केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में सबसे बड़ा छात्र संघठन के नाते अभाविप सभी fronts पर कामयाब सिद्ध हुई है।

शैक्षिक परिवर्तन के अभाविप के प्रयास उसके स्थापना काल से ही चल रहे है और वह संघर्ष आज भी चल रहा है। 1969 में न्यायमूर्ति गजेन्द्रगडकर कमेटी को दिये ज्ञापन में विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व सभी स्तर पर निर्णयों में होना चाहिए, यह माँग की। 1970 में दिल्ली में प्रथम राष्ट्रीय प्रदर्शन करते हुए 18 वर्षों में मताधिकार, शिक्षा का भारतीयकरण और भारत अणुबम बनाये ऐसी माँगे रखी। कैपिटेशन फी विरोधी कानून, शिक्षा के बाजारीकरण को रोकने वाली शुल्क नियंत्रण समिति, उत्तर पत्रिका की छायाप्रति छात्रों को मिलना, विद्यालयों से लैंगिक शिक्षा का विरोध ऐसी कई माँगे अभाविप के प्रखर आंदोलन से मानी गयी। जनजाती छात्रों

के छात्रावास की स्थिति में सुधार, सामाजिक आरक्षण को समर्थन। 6 मार्च, 1979 को 'संसद की ओर' नाम से अखिल भारतीय प्रदर्शन किया जिसमें 10 हजार छात्र 8 लाख छात्रों के हस्ताक्षर लेके 17 सूत्री माँग पत्र देने पहुँचे। राष्ट्रीय शिक्षापीठ का गठन हो, शिक्षा पर बजट का 90% व्यय हो, ग्रामोन्मुखी, नैतिक एवं मूल्य आधारित शिक्षा हो ऐसी माँगे वहाँ रखी गयी। 26 नवम्बर, 2002 में शिक्षा एवं रोजगार हेतु दिल्ली में 75000 छात्र–छात्राओं का विशाल प्रदर्शन अपने आप में अनूठा सिद्ध हुआ। शिक्षा का भारतीय करण, पाठक्रमों की पुनर्रचना, परीक्षा पद्धति में सुधार, सस्ती शिक्षा और संपूर्ण रोजगार समेत 58 सूत्री माँग पत्र हमने केन्द्र सरकार के सम्मुख रखा।

शिक्षा क्षेत्र की समस्याओं के खिलाफ आंदोलन, संघर्ष करते हुए अभाविप ने समय समय पर उठे विभिन्न मुद्दों पर नई शिक्षा नीती हो या Operation Black Board हो। नवोदय विद्यालय की सकल्पना हो या व्यावसायिक शिक्षा हो अभाविप ने अपने पर्याय रखे। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, निजी एवं विदेशी विश्वविद्यालय, NAAC द्वारा गुणवत्ता का मूल्यांकन, रैगिंग विरोधी राघवन् समिति नया छात्र संघ चुनावों के लिये गठित लिंगदोह समिति, यशपाल समिति का हाल ही में आया अहवान, अभाविप ने इन सभी विषयों पर अपना मत व मुद्दे सरकार को प्रस्तावित करते हुए अनेक सुझाव दिये है। उच्च शिक्षा में शुल्क संरचना पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण और जनजाति छात्रों के वसतिगृह की दयनीय स्थिति का सर्वेक्षण और बाद में सर्वोच्च न्यायालय में दायर की हुई जन हित याचिका अभाविप के न्यायालयीन संघर्ष की एक मिसाल है। शिक्षा के बाजारीकरण के विरोध में अभाविप की लड़ाई आज भी जारी है। सखोल चिंतन, समक्ष पर्याय व तीव्र संघर्ष इन 3 सूत्रों पर, विद्यार्थी को केन्द्र बिन्दू मानते हुए अभाविप का आन्दोलन शिक्षा क्षेत्र में आज भी चल रहा है।

राष्ट्रीय मुद्दों भी अभाविप जागरुक रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा को बरकरार रखने हेतु और राष्ट्रीय अस्मिता के सम्मान हेतु अभाविप सक्रिय रही है। अपने स्थापना काल में ही जो आंदोलन अभाविप ने किया वह देश का नाम भारत हो, राष्ट्रभाषा हिन्दी हो, राष्ट्रगान वंदे मातरम् हो और उद्योगों का स्वदेशीकरण हो इन मुद्दों के लिये किया गया। राष्ट्रीय मानबिन्दु के सम्मान का आंदोलन या 2 अक्टूबर, 1983 का असम में छेड़ा गया घुसपैठियों के विरोध में आंदोलन, 17 दिसम्बर 2008 के चिकननेक में हुए बांगलादेशी घुसपैठियों के विरोधी आंदोलन तक लगातार चलता रहा। घुसपैठियों को Detect.....Delete.....Deport यह नारा देश में इतना

गूंजा की मई 2009 के आम चुनाव में प्रत्येक राजनीतिक दल के घोषणापत्र में इस समस्या उल्लेख करना पड़ा और राष्ट्रीय सुरक्षा का यह प्रश्न सभी को मानना पड़ा। पं. बंगाल के कूचबिहार जिले के तीन बीघा हस्तांतरण का विरोध हो या 11 सितम्बर, 1990 में हुआ कश्मीर आंदोलन हो, अभाविप ने यह स्पष्ट दिखा दिया की राष्ट्रीय एकात्मता एवं सुरक्षा के मुद्दों पर अभाविप प्रखर राष्ट्रवादी भूमिका की पक्षधर रहेगी और राष्ट्रहित सर्वोपरि यही भूमिका लेगी। राष्ट्रीय सम्मान और सुरक्षा के साथ समझौता किसी भी कीमत पर नही।

अभाविप का 1975 में तानाशाही के खिलाफ चला यशस्वी संघर्ष अलौकिक है। स्वाधीन भारत में, दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को इंदिरा गांधी व कांग्रेस ने तानाशाही में ढकेल दिया। 25 जून, 1975 के रात्री आपातकाल जारी करके लोकतंत्र का गला घोट दिया। MISA नामक काला कानून लगाकर हजारों लोगों को जेलों में ठूँस दिया। नागरीकों का मुलभूत स्वातंत्र्य समाप्त कर दिया। इस तानाशाही के खिलाफ 'निर्भय बनो' का नारा देकर अभाविप के 10000 कार्यकर्ताओं ने देशभर में सत्याग्रह किये। 450 कार्यकर्ताओं पर MISA लगाया गया। हजारों कार्यकर्ता भूमिगत हो गये। इस आंदोलन ने 1977 के आम चुनावों में इंदिरा गांधी व कांग्रेस को ध्वस्त किया। लोकतंत्र जीत गया। जनता पक्ष सत्ता में आया। दुनिया में शायद यह एक अनूठा उदाहरण होगा की एक छात्र संघठन ने तानाशाही के खिलाफ लड़ाई लड़ी और जीती। जनता पक्ष में, सत्ता में सहभागी होने का न्यौता अभाविप को मिला लेकिन 1977 में सारनाथ की बैठक में अभाविप ने वह न्यौता ठुकराया और एक इतिहास रचा। "हमें राज नही समाज बदलना है" इस भूमिका से सत्ता में सहभागी न होने का सुस्पष्ट निर्णय अभाविप ने अपने सिद्धांतों के अनुरूप लिया।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया को आघात पहुँचाने वाले दहशतवादी जब–जब आक्रामक हुए तब–तब अभाविप ने इससे सामना कियां। पंजाब के खालिस्तानवादी, केरल, बंगाल के साम्यवादी, वामपंथी, माओवादी, नक्सलवादी ऐसे समस्त, हिंसक शक्तियों के सामने अभाविप लड़ी। इस लड़ाई मे केवल आंध्र प्रदेश में 22 कार्यकताओं ने नक्लसवाद से लड़ते हुए अपनी शहादत दी। लेकिन महाविद्यालयीन परिसरों से यह हिंसक नक्सली तत्वज्ञान उखाड़कर फेंक दिया। छात्रों के मन में विशुद्ध राष्ट्रभक्ति, लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर विश्वास रखनेवाला, विकास मूलक तत्वज्ञान उत्पन्न किया। जनवादी, समन्वयात्मक, बंधुभाव युक्त, शोषणमुक्त समाज यही इस देश का अंतिम उद्देश्य रहेगा और हिंसा का विरोध इस देश में होगा ये अभाविप ने दिखाया। सशस्त्र दहशतवादियों से एक छात्र संगठन यशस्वी लड़ाई लड़ता है। यह भी शायद दुनिया का एक मात्र उदाहरण होगा।

सामाजिक विषमता, छुआछूत, लिंगभेद, गरीबी, शोषण ऐसी विघातक प्रवृत्तियों के विरुद्ध अभाविप हमेशा सक्रिय रही है। रचनात्मक कार्यों में छात्र शक्ति का समायोजन करना यह भी अभाविप के गत 60 साल के कार्य का एक अनोखा वैशिष्ठ रहा है। संस्कार वर्ग, श्रमानुभव शिविर, रक्तगट सूची, अवकाशकालीन रोजगार योजना, निःशुल्क कोचिंग, Book-Bank, चिकित्सा शिविर, Vocational Guidance ऐसे विभिन्न कार्यक्रम/प्रकल्प अभाविप सेवा भाव से चलाती है। नैसर्गिक आपदाओं के समय कार्य करना यह तो अभाविप की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। गुजरात, लातूर का भूंकप हो या 2004 की सुनामी विभिषिका हो या 2008 में बिहार की विनाशकारी बाढ हो अभाविप ने राहत शिविर से लेकर अनेक प्रकार का कार्य किया। SEIL, युवा विकास केन्द्र, SFD ऐसी गतिविधियाँ।

संघठन के नाते सेवा, संस्कार एवं संघर्ष इन तीन सूत्रों पर अपनी गतिविधियाँ चलाते हुए अभाविप ने ज्ञान–शील एकता का भाव लाखों युवकों के मन में भरते हुए उनके जीवन में एक परिवर्तन किया है। मैं और मेरा परिवार इसके अलावा सामान्यतः न सोचने वाले युवाओं के कई पीढ़ियों को अभाविप ने इससे विस्तृत दुनिया दिखायी हैं। मैं और मेरे परिवार के अलावा मेरा गाँव, मेरा देश, मेरा समाज भी कोई है। मेरी भी एक जिम्मेदारी उनके प्रति है। यह विचार सिखाया। छात्र जीवन के बाद 40 वर्ष मैं निःस्वार्थ रूप से मेरे रूचि के अनुरूप सामाजिक काम में करता रहूँगा। यह परिवर्तन अभाविप ने सैकड़ों कार्यकर्ताओं में लाया। हमने व्यक्ति के सोच में बदलाव लाया। इस संवेदनशीलता से आज हजारों कार्यकर्ता समाज के विभिन्न क्षेत्र में कार्यरत है। अभाविप की 60 साल की यही वास्तविक पूँजी है।

व्यक्तिगत आशा आकांक्षाओं के अपनी छोटी रेखा (Line) पर सामाजिक, राष्ट्रीय संवेदनाओं की बड़ी रेखा अभाविप ने हजारों युवकों के मन में खींची और उन्हें कार्यरत किया।

अभाविप के स्वर्णिम 60 वर्ष की यही सबसे बड़ी उपलब्धि है। ■

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार डॉ. नंदिता पाठक को

प्रा.यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार के लिए मध्य प्रदेश के दीनदयाल शोध संस्थान की डॉ. नंदिता पाठक के नाम 'रोजगार निर्माण एव ग्रामीण विकास' हेतु कार्य के सम्मान में युवा पुरस्कार के चयनकर्ता मंडल ने चयन किया है।

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार का प्रारंभ 1991 में इस श्रेष्ठ प्रेरणादाई व्यक्ति की पावन स्मृति में हुआ। अभाविप और विद्यार्थी निधि न्यास का यह संयुक्त उपक्रम है। विभिन् समाजोपयोगी विषयों पार काम करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओ के कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु समाज के सम्मुख लाना और ऐसे कार्यकर्ताओ के प्रति समूचे युवा वर्ग की कृत्यागता प्रकट करना यह इस युवा पुरस्कार का प्रयोजन है। इस युवा पुरस्कार में नगद राशि: रूपये 25000, प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह समाविष्ठ है !

'आहार एव पोषण' में पदव्युत्तर शिक्षा पाने के बाद, पदम् विभूषण मा. नानाजी देशमुख के साथ हुई उनकी भेट में नानाजी ने उन्हें बताया की 'आपके जैसी लड़कियों को पैसा कमाने का काम करने की बजाय समाज सेवा में जुटना चाहिए' और यही भेट डॉ. नंदिता के जीवन में बदलाव लायी। सन 1994 से उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान के चित्रकूट प्रकल्प में समाज सेवा के व्रत की शुरुवात की तथा आज तक वो समर्पित जीवन से काम कर रही है। चित्रकूट के आस–पास के 500 गावो में उन्होंने आत्मनिर्भरता अभियान चलाया जिसमें, 'अत्मा–निर्भता' के साथ ही 'दरिद्रता, निरक्षरता, बीमारी का निर्मूलन, स्वास्थप्रद जीवन का प्रबंध', 'वादमुक्त, स्वच्छ एव हरित गावों का निर्माण' अदि कार्यो का भी अंतर्भाव था।

दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा शु किये गए उद्यमिता विद्यापीठ की स्थापना ए व्यवस्थापन कार्य में डॉ. नंदिता पाठक क विशेष सहभाग था। एक गॉव, एक उपज बहुस्तरीय रोजगार निर्माण नामक 'स्व आधार गट' द्वारा चलाए गए इस चित्रकू प्रकल्प में नया परिवर्तन लाने की जिम्मेवा उन्होंने निभाई है। 'बिना महिला सहभाग स समाज का पूर्ण विकास असंभव है' ऐसी उनक धारणा होने के कारण उन्होंने महिलाओ क प्रेरणा देने एवं उनका उत्थान करने हेतु 'वार्षिक महिला संगम' जैसे महिलाओ मे जाग्रति पैदा करने वाले कर्यकमों का आयोजन किया। चित्रकूट प्रकल्प के सेवा कार्य में जुटे रहने के बाद भी उन्होंने 100 से भी ज्यादा राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चाओं में बी भाषणों को प्रस्तुत किया है। डॉ. नंदिता पाठक राष्ट्रीय महिला कोष नई दिल्ली, बल शिक्षा एव मजदूर केंद्रीय बोर्ड, मध्य प्रदेश विज्ञान एवं औद्योगिकी परिषद् जैसे अनेक प्रतिष्ठित संस्था एव विद्यापीठों के संचालक मंडल की सदस्या भी है।

डॉ. नंदिता पाठक को यह पुरस्कार 'उना' (हिमाचल प्रदेश) में 30 अक्टूबर 2009 से 1 नवम्बर 2009 को होने वाले विद्यार्थी परिषद् के 55 वे राष्ट्रीय अधिवेशन में 1 नवम्बर 2009 को आयोजित सार्वजनिक समारोह में प्रदान किया जायेगा। ■

घर घर में दीपावली हो....
यही संकल्प हमारा....

सुनील आंबेकर
(राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अभाविप)

कल पटना से मुंबई आ रहा था। भुसावल स्टेशन पर एक कार्यकर्ता प्रातः नाश्ता लेकर आए थे। दीपावली का धनत्रयोदशी का दिन था, इसलिए स्वाभाविक कुछ दीपावली की विशेष खाद्य सामग्री भी साथ देकर गए। गाड़ी छूटते ही हम नाश्ता प्रारंभ करने ही वाले थे, तो एक लड़का कुछ मांगने आ गया। हमने एक मिनट सोचा, बाद में लगा कि इसमें जो मिठाई होगी वह उसे आज अवश्य देंगे। वह लेकर चला गया। बाद में हमारा भी नाश्ता हो गया। इस छोटे से प्रसंग के कारण कई बातें मन में आना प्रारंभ हुआ।

दीपावली लगभग पूरे देश में मनायी जाती है। यह खुशियों का त्यौहार है। अंधकार, अज्ञान का, अभाव का, अन्याय का समाप्त होकर प्रकाश का पर्व प्रारंभ होने का संकेत देता है यह दीपावली का त्यौहार। वह दिन कितना सुंदर होगा, जिस दिन भारत के हर घर में दीपावली खुशियाँ लेकर आयेगी। हर घर में दीपक जले, मिठाइयाँ हो, कम से कम बच्चे तो नये कपड़े पहन सके। यह दिवास्वप्न नहीं है। अपितु संभव है तथा आवश्यक भी। जरुरत है हमारे सभी के संवेदना व संकल्प की। देश में महंगाई की मार लगातार चल रही है। सामान्य वर्ग की हालत गम्भीर हो रही हो, तो गरीबों की स्थिति कितनी विकट होगी, यह कल्पना ही भयंकर है। रोजमर्रा की दाल, चावल, गेहूँ, तेल, चीनी सबकुछ कई गुना महंगा हो रहा है। आम आदमी की दुहाई देकर बनी सरकार अपने निजी स्वार्थों के चलते कुछ नहीं कर रही है। संकट के बादल घने हो रहे हैं, परन्तु समाधान नजर नहीं आ रहा है।

नफाखोरों से साठगाँठ के बिना इस कदर महंगाई बढ़ना संभव नहीं लगता। सरकारी गोदामों में संग्रह की कमी, खरीददारी की नीतियों में अनियमितता तथा भारी कीमतों पर आयात जैसी नीतियाँ स्वयं साठगाँठ के षड्यंत्रों को इंगित करती है।

सामान्य मध्यमवर्ग मान के चल रहा है कि यह तो भगवान की इच्छा है, इसलिए ऐसा ही जीने की मजबूरी समझकर चुपचाप चल रहा है। संपन्न लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता तथा अत्यंत गरीब लोग स्वयं के नसीब को दोष देकर मजबूरी में चुप है। यह समय हे कि देश की छात्रशक्ति इस हतबल मानसिकता को तोड़कर संघर्ष आरंभ करे।

देश में हर संसाधन के शोषण एवं व्यापारीकरण की स्पर्धा चल रही है। परिणामवश हर व्यवस्था महंगी तथा सामान्य व्यक्ति के पहुंच के बाहर हो रही है। 1991 के वैश्वीकरण, निजीकरण (बाजारीकरण) की तथा मुक्त अर्थव्यवस्था की त्रिसूत्री ने (LPG-Liberalisation, Privatisation, Globalisation) दुनिया भर में अपना कमाल दिखाया है। दुनिया भर की वस्तुएँ भारत के हर छोटे–मोटे बाजारों में उपलब्ध है। बाजार को अत्यधिक महत्व मिलने के कारण निजीकरण का जो दौर चला है उसमें भयंकर स्पर्धा के चलते हर वस्तु में,सेवाओं में कुछ सुधार तो हुए लेकिन अधिक महंगी हो गयी है। अर्थात् कुछ लोगों की दुनिया तो अत्यधिक रंगीन हो गयी लेकिन बहुत लोगों की दुनिया उजड़ रही है। सरकारी नियंत्रण को बड़ी–निजी कंपनियों एवं विकसित देशों ने अपने हित में करवा लिया तथा परिणाम स्वरूप वह सरकारें लोकहित की आवश्यक बातों से भी पीछे हट रही है तथा सामान्य व्यवस्थाएँ भी निजी हाथों में जाने के कारण रोजमर्रा का जीवन आम लोगों के लिए काफी कष्टमय हो गया है।

शिक्षा के बड़े–बड़े महाविद्यालय उपलब्ध हो गये हैं लेकिन उसके शुल्क देखकर गरीब दूर ही खड़ा है। या फिर इन लोगों की बड़ी–बड़ी बैंकों के कर्जे लेकर, उसे चूकता करने के लिए उनका नये जमाने का बंधुआ मजदूर (Bounded labour) हो रहा है। खैर उसे कम से कम रोजमर्रा के बातों का अभाव नहीं हैं यही खुशी की बात है।

अब बड़े–बड़े अस्पताल खुल रहे है। नये–नये अनुसंधान होकर कई प्रकार की चिकित्सा पद्धति उपलब्ध हो रही है। परन्तु सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध सुविधाएँ तथा सरकारी प्राथमिक विद्यालय कभी–कभी एक जैसे लगते है। यह जरूर है कि कुछ उच्च शिक्षा संस्थान तथा एम्स (AIIMS) जैसे कुछ अस्पताल भारत की शान बढ़ाते है तथा हमारी क्षमता को प्रदर्शित भी करते हैं। प्रश्न है। आम व्यक्ति के लिए वहाँ तक पहुँचने के लिए रास्ता काफी लम्बा है।

ऐसे सामान्य बातों के भारी अभावों से अपने देश की अधिक जनसंख्या जूझ रही है। उनके लिए प्रगतिपथ पर आगे बढ़ रहे भारत में भी सामान्य घर, आवश्यक कपड़ा यह सभी दूर की बाते है। न्यायालयों में उनका सामना अन्याय से, सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार से, समाज में असमानता के आधार पर हाथ से निकलते अवसरों से तथा अपमान से होता है।

अहम् प्रश्न यह है कि आगे बढ़ रहे मेरे भारत में इन बातों से फर्क किसे पड़ता है? क्या वोट लेने वाले नेताओं को? या वह मजबूरी का फायदा लेकर कभी लुभावने नारे व कभी छोटी–मोटी लालच देकर उसे खरीद लेते है।

क्या सरकारी अधिकारियों को फर्क पड़ता है? या वह अनपढ़ जनता को कागजी खेल में उलझा देती है। क्या उनपर हो रहे अत्याचार से पुलिस को फर्क पड़ता है? वह उन्हें ही अपना डण्डा दिखा चुप करा देती है।

क्या न्यायालय को फर्क पड़ता है? या वह बड़े वकीलों के तर्क तो लंबी–लंबी तारीखें देकर अपना समय काट लेती है? क्या दुनिया को फर्क पड़ता है? या फिर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कुछ बड़ी–बड़ी योजनाओं सम्मेलनों से वे नाम कमा लेते हैं या कुछ हिंसक आंदोलनों को शस्त्र देकर बस हंगामा खड़ा कर देते है। क्या संपन्न लोगों को फर्क पड़ता है? या वह पैसे का खेल चलाकर या कुछ दान देकर पुण्य कमा लेते है। लेकिन बहुत लोग ऐसे भी है जिन्हें फर्क पड़ता है? दुःख भी होता है। वह प्रयास भी कर रहे है।

हमें भी सोचना जरूरी है कि क्या मुझे फर्क पड़ता है? तो फिर मेरे युवा साथियों आओ, हम आवाज भी उठाये तथा सृजनात्मक पहल भी करें। अर्थात उन सभी के साथ मिलकर। ताकि इस बार नहीं तो अगली बार कुछ उजाला जरुर हो। ■

वंचितों को छोड़कर राष्ट्र पुर्ननिर्माण असंभव

श्री दत्तात्रेय होसबाले
(पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री)
अभाविप

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सर कार्यवाह मा. दत्तात्रेय होसबाले करीब ३० वर्षों तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के विभिन्न दायित्वों पर रहे है। परिषद में अपने इस लम्बे कार्यकाल में दत्ता जी ने ढेरों प्रेरणास्पद अनुभव बटोरे है, उनके अनुभवागार को साझा कर रहे है 'उमाशंकर मिश्र'

अभाविप से आपका कैसे जुड़ना हुआ?

वर्ष 1971 में Expo-70 की खामियों को लेकर बंगलौर में अभाविप का विरोध आंदोलन चल रहा था। हालांकि संघ की शाखाओं में आना–जाना पहले से ही चल रहा था, लेकिन इस आंदोलन में अभाविप के बारे में जानने एवं शामिल होने का मेरे लिए पहला अवसर था। 1972 तक शाखा के काम में रहा। उन्हीं दिनों अभाविप के रजत जयंती पर 15 अगस्त को आयोजित मशाल जुलूस विद्यार्थी परिषद् में मेरा पहला कार्यक्रम था। बस यहीं से अभाविप के कार्यालय आना–जाना, स्वाध्याय मंडल जाना आरंभ हो गया। 1973 के मई में दक्षिण भारत का अभ्यास वर्ग, उससे पहले पटना में राष्ट्रीय अधिवेशन था। यह मेरा प्रथम अधिवेशन था, जिसमें यशवंत राव केलकर जी एवं मदनदास जी जैसे लोगों को पहली बार मैंने देखा। 1973 के अभ्यास वर्ग में भी मैं शामिल हुआ और फिर सिलसिला कई वर्षों तक चलता रहा।

अभाविप के लम्बे कार्यकाल में आपके अनुभवों के बारे में बताएं?

विद्यार्थी परिषद् में रहकर मैंने जीवन में बहुत कुछ पाया है। सबसे पहले वैचारिक दृष्टि एवं गहराई, जीवन दृष्टि, देश के बारे में ज्ञान, सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि एवं उसमें युवाओं की भूमिका और नौजवानों को राष्ट्र कार्य हेतु प्रेरित करने जैसे कार्य ध्यान में आये। इस दौरान एक अमूल्य सम्पत्ति भी मिली, वह समान दृष्टि एवं विचार के दोस्त हैं। यह बड़ी सम्पत्ति है। सहयात्री भी रहे, व्यक्तिगत जीवन में भी ढेरों मित्र मिले। ऐसे सैकड़ों नाम हैं, जिन्हें अंगुलियों पर नहीं गिनाया जा सकता। ऐसे कई लोग हैं, जो आयु से बड़े हैं, उनमें मदनदास जी, गौरीशंकर जी, हरेन्द्र जी, राजकुमार भाटिया जी इत्यादि। 1972 से 2003 तक के मेरे कार्यकाल के इतने मित्र हैं कि सभी के नाम देना यहां संभव नहीं होगा। केवल संगठनात्मक ही नहीं, अपितु देश, समाज एवं विचारधारा से जुड़े अनेक लोग मिले जो व्यक्तिगत एवं संवेदनात्मक स्तर पर भी साथ हैं।

विभिन्न गतिविधियों एवं आंदोलनों में भी आप रहे हैं, उनमें से कौन से यादगार हैं?

असम आंदोलन के दौरान हम गुडविल मिशन पर वहां के अंदरूनी हिस्सों में गए। यह एक यादगार अनुभव था। वहां केवल दो प्रतिशत मतदान हुआ और सरकार बनी थी। चुनाव के बाद वहां भीषण हिंसाकांड हुआ। विद्यार्थी परिषद के दल ने अपनी यात्रा के अनुभवों से वहां के हालातों पर अध्ययन रिपोर्ट तैयार

की। इस अभियान के दूसरे चरण में सत्याग्रह का आयोजन किया गया था, लेकिन हिंसा के चलते वहां जाना आसान नहीं था, इसलिए हमने गुप्त रूप से असम में प्रवेश किया और सत्याग्रह में हिस्सा लिया, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

तमिलनाडु में एक टुटीकारेन नामक स्थान पर एक बीएड. कॉलेज था। टुटीकारेन में विद्यार्थी परिषद् का तब तक कोई काम नहीं था। एक दिन उस कॉलेज के प्रिंसीपल से मिलने उसके घर पहुंच गए और वहीं भोजन किया। उल्लेखनीय है कि उन प्रिंसीपल महोद्‌य को भी तब अभाविप के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। भोजन करने के बाद वे मुझे अपने साथ कॉलेज ले गए। रास्ते में उन्होंने पूछा कि एबीवीपी क्या करता है और ले जाकर कक्षा में खड़ा कर दिया और छात्रों के समक्ष भाषण देने के लिए कहा। मैंने भाषण देना आरंभ किया और छात्रों को शिक्षा क्षेत्र, सामाजिक परिवर्तन में युवाओं की भूमिका एवं अभाविप के बारे में बहुत सी जानकारियां दी। बाद में ऑफिस में ले जाकर प्रिंसीपल साहब ने मुझे 50 रुपये का नोट थमा दिया, उस समय यह काफी बड़ी रकम थी। उन्होंने मुझे हर महीने उस कॉलेज में ऐसी ही एक कक्षा को संबोधित करने के लिए कहा। बाद में टुटीकारेन में काम बढ़ा और संगठनात्मक गठन किए गए।

केरल में जिला बैठकों में शामिल होना भी यादगार रहा। 14 दिन में 14 जिलों में बैठकें करनी थी, लेकिन कार्यकर्ताओं को अनुभव नहीं था। लेकिन सब कुछ अच्छे से निपट गया।

अपने प्रथम विदेश प्रवास के बारे में बताएं?

मेरा पहला विदेश प्रवास रूस में नवंबर 1978 में हुआ। साथ में अरुण जेटली, बाल आपटे, पी.वी. कृष्ण भट्ट, महेश शर्मा भी थे। राम बहादुर राय को भी आना था, लेकिन किन्हीं कारणों से वे नहीं आ सके थे। अभाविप के प्रतिनिधी मंडल के तौर पर हमारा दल रूस में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित एक कार्यक्रम में हिस्सा लेने जा रहा था। देश-विदेश के कई छात्र संगठनों समेत, खेल जगत एवं कला जगत के प्रतिनिधी वहां एकत्रित हो रहे थे। इस यात्रा का आरंभ ही बड़ा रोचक रहा, क्योंकि रूसी विदेश मंत्रालय से मुझे जो वीजा मिला उसमें अशुद्धि थी, अधिकारियों से बात करने के बाद मुझे बिना वीजा के यात्रा करने की अनुमती मिल गई थी, रूसी अधिकारी एयरपोर्ट से मुझे लेने आये और बाद में रूस में ही पासपोर्ट एवं वीजा दिया गया। इस यात्रा से अभाविप को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलने लगी। इस कार्यक्रम में सभी छात्र संगठन इस बात को लेकर एकमत थे कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नं.-1 छात्र संगठन है। जबकि दूसरे स्थान के लिए अन्य छात्र संगठनों में मारामारी थी।

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य पर आपकी क्या राय है?

अभाविप के अपने कार्यकाल के तीन संदर्भों को जोड़कर मैं अपनी बात रखना चाहूंगा। 1977 से पहले जेपी आंदोलन से हमारी उम्र की पीढ़ी का सार्वजनिक जीवन शुरू हुआ। नौजवानों ने इस आंदोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उनकी एकजुट आवाज से समाज के सभी वर्गों के लोग नौजवानों के साथ आकर खड़े हो गए। यह वह दौर था, जब हमने अपने नारों को क्रियान्वित होते हुए देखा था। तब हमें सामाजिक जीवन में युवाओं की प्रभावकारी भूमिका का आभास हुआ था।

इसके बाद एक अनुभव 1980 के बाद देखने को मिला, तब हमें यह आभास हुआ कि राजनीतिक प्रभाव एवं सत्ता के कारण आंदोलन कैसे विफल हो जाते हैं। यह एक कटु वास्तविकता है। तब अभाविप ने प्रण किया कि हम राजनीति में नहीं जाएंगे और फिर 4 साल तक हम छात्र संघ चुनाव में भी नहीं गए।

दूसरी बात यह है कि शिक्षा परिवर्तन को लेकर नारे तो खूब लगाए जाते हैं, ढेरों सुझाव आते हैं लेकिन उनके क्रियान्वन की बात जब आती है, तो सब पीछे हट जाते हैं। राजनीतिक इच्छाशक्ति के न होने से क्रियान्वन नहीं हो पाते हैं। शिक्षा प्रणाली आज युवाओं को समाज एवं राष्ट्र से जुड़ने की सीख नहीं देती। तीसरी बात युवाओं की भावना से जुड़ी है। हाल ही में 1857 आंदोलन के 150 वर्ष पूरे हुए हैं। इस दौरान देश भर में अभाविप की ओर से कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें युवाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। बिहार के किशनगंज जैसे दूरदराज के इलाके में आज भी अभाविप के आह्वान पर 50 हजार से अधिक युवा बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ आंदोलन के लिए इकट्ठे हो जाते हैं। इसी तरह विदर्भ के कोरकू आदिवासी बाहुल इलाके मेलघाट में आदिवासियों में व्याप्त कुपोषण एवं उससे होने वाली मौतों को रोकने के लिए आज भी युवा दल वहां जन जागरूकता अभियान के लिए जाते हैं। इन बातों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि आज भी युवाओं में सामाजिक जीवन, राष्ट्र कार्य, देश एवं देशवासियों के प्रति लगाव है। बस जरूरत है तो सही नेतृत्व, सही दिशा, ध्येय एवं सही कार्यक्रम की।

आज के शैक्षिक वातावरण में इन चीजों की नितांत आवश्यकता है।

वर्तमान छात्र संगठनों के स्वरूप पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

यह बात कुछ हद तक सही है कि छात्र संगठनों में कार्यकर्ताओं के बॉस राजनीतिक दलों के नेता बन जाते हैं और ग्लैमर का प्रदर्शन करते हैं। लेकिन सभी ऐसे नहीं हैं। सामाजिक परिवर्तन की तमन्ना रखने वाले लोग भी हैं। वर्तमान परिस्थितियों में बदलाव आये हैं, इसलिए तात्कालिक परिस्थितियों के मुताबिक युवाओं को सामाजिक परिवर्तन के लिए आंदोलित करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अन्य छात्र संगठनों में सामाजिक एजेंडा की बजाय राजनीतिक एजेंडा को महत्व दिया जाता है।

वैश्वीकरण के दौर में आज छात्रों का रुझान कैरियर को लेकर रहता है, विभिन्न क्षेत्रों में जाने की उनकी इच्छा है। वे भी चाहते हैं कि मौज मस्ती करें, भौतिक साधनों को पायें, इत्यादि। लेकिन आज चुनौतियां अधिक हैं, सामूहिक शक्ति के साथ समाज परिवर्तन का कार्य होना चाहिए। सामाजिक, शैक्षिक जागरण में जन संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका लोकतंत्र में होती है। हमारे देश में अनेक आंदोलन हुए। लेकिन उनमें से अनेक आंदोलन मसलन किसान आंदोलन एवं मजदूर आंदोलन ठप्प हुए हैं। आज इन आंदोलनों में कहां कोई लहर देखने को मिलती है? वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए यह सवाल भी उठ रहा है कि क्या विद्यार्थी आंदोलन भी इसी तरह ठप्प हो जायेगा? इसलिए आज अधिक कार्य करने की जरूरत है।

शिक्षा के व्यापारीकरण पर आपकी प्रतिक्रिया?

एक जमाना था, जब गरीब छात्रों के लिए छात्रावास हुआ करते थे और समाज मिलकर योग्य छात्रों की शिक्षा का प्रबंध करता था। लेकिन आज निजीकरण के दौर में समान्य विद्यार्थी से शिक्षा दूर होती जा रही है। वैश्वीकरण का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। व्यावसायी प्रवृत्ति के लोग विदेशी मॉडल अपनाने के लिए दबाव बना रहे हैं और उनके द्वारा शैक्षिक अनुदान हासिल करने की होड़ लगी हुई है। जिससे समाज में विषमता की खाई बढ़ रही है।

विदेशी मॉडल्स को अपनाने की बजाय इस पर विचार करने की जरूरत है कि कम खर्च में बेहतर शिक्षा कैसे सुलभ कराई जाये। नवोदय विद्यालयों का मॉडल इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम कहा जा सकता है। एक समय था कि गरीब विद्यार्थी को छात्रवृत्ति मिलती थी, लेकिन आज की रचना ऐसी नहीं है और गरीब विद्यार्थियों की प्रतिभा देश के विकास के काम नहीं आती। विकास एवं शिक्षा की योजना साथ-साथ लेकर चलना चाहिए। हम सब कहते हैं कि भारत गांवों का देश है, किसानों का देश है, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि कार्पोरेट शिक्षा प्राप्त छात्र ग्रामीण क्षेत्र में नहीं जा सकता।

दो तीन बातों पर ध्यान देने की जरूरत है। विकास योजना के साथ शिक्षा की योजना बनाना, शिक्षा के ढांचे में गरीब छात्रों का स्थान सुनिश्चित करना, अच्छे संस्थानों के छोटे मॉडल तैयार करना इत्यादि। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि दुनिया के 100 टॉप विश्वविद्यालयों में से एक भी भारत का नहीं है। दूसरी ओर हमारे यहां गरीबों एवं वंचित छात्रों की ओर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है, तो शिक्षा में हम आखिर हम कहां खड़े हैं! हमारे देश की परिस्थितियों को देखते हुए कहा जा सकता है कि छोटे मगर अच्छे संस्थान बनाये जाने चाहिए, जहां ताम-झाम कम होगा तो व्यापारीकरण भी रूकेगा। आधुनिक गुरुकुल व्यवस्था पर भी विचार करना चाहिए। साथ ही प्रतिभा शोध भी होना चाहिए।

शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होने के क्या कारण हैं?

शिक्षा प्रणाली व्यापक हुई है, लेकिन आज कई प्रकार के नीति संबंधी विषयों के कारण प्रयोगशीलता को बाधा पहुंचती है। राजनीतिकरण, प्रशासनिक बाधाएं एवं व्यापारीकरण के कारण शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। अच्छे काम का ध्येय रखने वाले लोगों को सरकारी कार्यालयों के कॉरीडोर में घूमना पड़ता है। शिक्षा में स्वायत्तता नहीं है, तो गुणवत्ता कहां से आयेगी? शिक्षा ही नहीं खेल जगत में भी भ्रष्टाचार का बोलबाला है। 2005 से अब तक 5 बार राष्ट्रीय खेल स्थगित हो चुके हैं। राष्ट्रमंडल-2010 की तैयारी चल रही है, लेकिन अब तक हमारे राष्ट्र खेल ही आयोजित नहीं हो सके हैं, तो खिलाड़ियों का चयन आखिर कैसे होगा।

भ्रष्टाचार देश के समक्ष एक बड़ी चुनौती है, इससे कैसे निपटा जाये?

भ्रष्टाचार एक महामारी है, जिसका किसी गोली से ईलाज संभव नहीं है। लालू यादव, क्वात्रोची, मधु कोडा जैसे लोगों के विरोध में लोकतंत्र में चर्चा, मंथन, आवाज होनी चाहिए। लेकिन यह परिणामकारी दवा नहीं है। हमारी चुनाव पद्धति में पैसे के बिना चुनाव नहीं लड़ा जा सकता। लाइसेंस परमिट को तो हटाया गया, लेकिन कांट्रेक्ट की पद्धतियां जस की तस हैं।

भ्रष्टाचार के केन्द्र प्रशासनिक ढांचा, चुनाव पद्धति, शिक्षा का व्यापारीकरण, ठेका पद्धति है। शीर्ष स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकना चाहिए। इसे रोकने के लिए संस्कारपूर्ण शिक्षा की जरूरी है। घर में भी चरित्र निर्माण की सीख देनी होगी। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संगठनों का आग्रह भ्रष्टाचार के निवारण हेतु होना चाहिए।

अभाविप के षष्ठी पूर्ति के अवसर पर आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं कामना रखता हूं कि भारत के विद्यार्थी एवं विद्यार्थी परिषद् पूरी दुनिया में सबसे आगे रहें। विश्व के किसी भी देश, समाज के विद्यार्थियों से भारत के विद्यार्थी पीछे नहीं हैं। बस प्रोत्साहन की जरूरत है। देश एवं समाज को भी कैरियर के पाठ्यक्रम में दिखाया जाना चाहिए। "कैरियर फॉर द कंट्री" की भावना विद्यार्थियों में दिखे, इसके लिए प्रयास किये जाने चाहिए। हमारे देश के युवाओं में सामर्थ्य है, क्षमता है, वे आगे भी बढ़ रहे हैं, देश की सभ्यता को संरक्षित रखने के लिए कार्य कर रहे हैं। अभाविप को शिक्षा क्षेत्र एवं परिसर में आग्रह करना है। भारत की समृद्धि एवं सामर्थ्य को कैसे आगे बढ़ाना है, इसको ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों का आयोजन करना, यही सब अभाविप का लाईफ मिशन है।

गरीब एवं पिछड़े इलाकों के छात्रों को वर्तमान युग कैरियर के बारे में जानकारी नहीं है। गरीबी के कारण उनकी प्रतिभा दबकर रह जाती है। अभाविप को उनके बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए। गरीबी के चंगुल में फंसे ऐसे छात्रों को समाज विरोधी ताकतें अपने जाल में फांसने का प्रयास करती हैं। इसके लिए जिम्मेदार कौन है? राष्ट्र पुर्ननिर्माण उनको छोड़कर नहीं हो सकता। विवेकानंद की–'दरिद्रो देवो भव:, पतितो देवो भव:' की उक्ति को नहीं भूलना चाहिए। और यह भी नहीं भूलना चाहिए कि विवेकानंद विद्यार्थी परिषद् के आदर्श हैं।

अभाविप की 60 वर्षों की यात्रा में कौन सी उपलब्धियां आपको नज़र आती हैं?

राजनीतिक पिछलग्गू अभाविप नहीं बनी, यह एक बड़ी उपलब्धि है। रचनात्मक कार्य एवं प्रयोगशीलता को बनाये रखना भी महत्वपूर्ण है। एक प्रवाहमान छात्रों का स्थायी संगठन बनाते हुए रचनात्मक कार्यों में उन्हें लगाना सबसे बड़ी बात है। राजनीतिक संगठन अभाविप नहीं बना, लेकिन आज भी इस संगठन में मुद्दों को उठाने की क्षमता है। राष्ट्रवादी विचार के प्रबल संगठन होना भी एक बड़ी उपलब्धि है। विचार के लिए विद्यार्थियों को खड़ा करने का कार्य अभाविप ने किया है।

मानव संसाधन मंत्री कपिल सिब्बल के शैक्षिक परिवर्तन के अभियान पर आपकी राय?

प्रो. यशपाल कमेटी सिफारिशों के आधार पर शैक्षिक सुधार किए जा रहे हैं। उनमें कई बातें स्वागत योग्य हैं। लेकिन कॉर्पोरेट्स के साथ मिल कर शिक्षा देने का जो प्रस्ताव है, वह एक बड़ा खतरा साबित हो सकता है। अभाविप द्वारा बंगलौर के एक कार्यक्रम में बोलते हुए प्रो. यशपाल ने इस इन सिफारिशों के बारे में कई बातें बताई थी। लेकिन ध्यान देना होगा कि प्रो. यशपाल तो अकादमिक व्यक्ति हैं, लेकिन महत्वपूर्ण समस्या क्रियान्वयन के स्तर से जुड़ी है। सरकार की मंशा यहीं से जाहिर होती है। समाज के सभी वर्गों को मूल्य आधारित शिक्षा निर्विघ्न कैसे मिले यह सुनिश्चित करने की जरूरत है।

दुनिया भर के छात्र संगठनों पर आपका अध्ययन है, विश्व स्तर पर अन्य छात्र संगठनों की अपेक्षा अभाविप को आप कहां खड़ा पाते हैं?

वैश्विक छात्र आंदोलन एवं अभाविप के आंदोलन में मूलभूत अंतर है। हम अभ्यास वर्ग में चीन, जापान, फ्रांस, इटली के छात्र आंदोलनों की सामूहिकता का उदाहरण देते हैं। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि वे सभी आंदोलन पानी के बुलबुले की तरह उठे, प्रभावकारी भी रहे, लेकिन बाद में बिखर गए। ये आंदोलन बाद में किसी रचनात्मक आंदोलन में नहीं बदल सके। लेकिन इसकी अपेक्षा अभाविप असम आंदोलन, शैक्षिक आंदोलन, जेपी आंदोलन में शामिल रहा, लेकिन उसके रचनात्मक कार्य आंदोलन समाप्त होने के बाद भी यथावत् चल रहे हैं। फ्रांस में बड़ा शैक्षिक आंदोलन हुआ, सिओल में डंकल प्रस्ताव के बाद डबल्यूटीओ से समझौते के कारण प्रधानमंत्री को इस्तीफा देना पड़ा, इंडोनेशिया में 1968 एवं 1998 में छात्र आंदोलन हुए, चीन का थ्यानमेन चौक पर तीन हजार से अधिक छात्रों की हत्या कर दी गई, तो उदाहरण छात्रशक्ति के बड़े हस्ताक्षर कहे जा सकते हैं। लेकिन अभाविप का आंदोलन इन सबसे अलग है। जेपी आंदोलन, असम आंदोलन, बोफोर्स घोटाला, कश्मीर आंदोलन, शैक्षिक आंदोलन को करते हुए प्रवाहमान छात्र संगठन के रूप में खुद को स्थापित करने का जो दर्शन हमने दिया है, वह दुनिया भर में विशिष्ट है। ■

Guest Column

India & China: Talk Peace For Mutual Benefit

M.V Kamath

Till about the 1950s India did not really have any foreign policy experts. The one supposed expert was Jawaharlal Nehru, well-read, well-travelled and reportedly knowledgeable about world affairs. In VK Krishna Menon, who became his Defence Minister he had a fellow expert who had spent a life-time in Britain, was in close touch with British political leaders and on those grounds considered a man to be trusted in the formulation of policies concerning international relations. Their concepts were largely Anglo-centric. Nehru had travelled thro' Europe and even visited Moscow. He was well aware of Nazism, Fascism and the evils of Imperialism and had great sympathy for China's fight against western colonialism.

Even when the Civil War was still being waged in China, in a broadcast in 1946 Nehru spoke of "China, that mighty country with a mighty past, our neighbour (which) has been our friend through the ages whose friendship will endure and grow". He was soon to learn that friendship with China is a chimera, a thing of Nehru's fertile imagination. Time and again, after Mao came to power (and India was the second nation to extend diplomatic recognition to it) he consistently dismissed Nehru and his colleagues as "running dogs of imperialism". China showed little respect either for Nehru or for India. Despite India's efforts to please China and to plead its case—against the will of the US and its allies—for rightful permanent membership of the UN Security Council, China showed no gratitude.

When in 1945 India itself was offered Permanent Membership of the Security

Council, it was Nehru who declined the honour, maintaining that China deserved it more. Friendship with China has invariably been a one-way street. An excellent study of Sino-Indian relations up to the mid-sixties is Sudhakar Bhat's India and China published in 1967, reading which should relieve us of our delusions. If Shri MK Narayanan wants to know "why there is so much hype" in the Indian media over alleged Chinese military incursions into India territory, he should remember the resounding slap on India's face in 1962 administered by Mao Tse-tung to teach India "a lesson", while India was singing "India-China, bhai bahai".

Since when India has sounded frightened of China as a child is of a menacing ghost. The Indian psyche has been deeply hurt and it will remain so for a long time. Never mind at what cost China grew to be a power. Never mind China's disdain of India. The first Chinese attack against post-independence India was when its troops stormed the thinly manned Indian police outpost in NEFA in August 1957—exactly fifty years ago—and killed two Indian frontier policemen. To mention all these is not to promote enmity towards China. It is to face grim reality. One respects the Government of India's desire not to sound provocative, but for that reason do we have to be supine towards Beijing all the time? And refuse to learn from history?

God alone knows how strongly India wants peace. India has never consciously gone to war against any nation in its long and turbulent past. It has respect for all people, all religions, all cultures. From Nehru onwards India has been respectful of China's traditions and rich past. But it behoves the Government of India not to be seen as frightened and consequently attempting to stop all mention of hurt done to India. That reflects poorly on us. Two things must always be kept in mind: India wants peace not just to placate any country—including Pakistan—but for its own sake. India has to be politically alert. What one wants to know is whether Delhi is underplaying the Chinese threat. Is it true that President Pratibha Patil has dropped her plans to undertake an official visit to China? Is it true that at a closed door session, two senior RAW officials said Chinese incursions should not be overlooked as China had 'bigger designs'? Word is being passed that our Air Force is a third of China's. A war with China, in any eventuality is ill-logical, irrational and unrewarding.

According to The Times of India (September 17) China's Foreign Ministry, in response to a questionnaire sent it by the paper has said that the relationship between China and India is stable and that "the mutual trust is growing". The Ministry's response reportedly goes on to say that the time is now actually favourable for resolving the border dispute once and for all. Beijing's indication that it is inclined towards settling the decades old territorial row is welcome. But in Delhi there reportedly are two views on how to deal with China resulting in a high-level meeting of officials being postponed. On the one hand, Sino-Indian trade relations are increasing by leaps and bonds. On the other, doubts are being expressed about China's intentions. It is not enough for China to say that mutual trust between it and India is growing and for India's External Affairs Minister S M Krishna to declare that the country's border with China is peaceful.

China must show with deeds and not merely with words that when it speaks of "mutual trust", it means it. Send-

ing troops to paint a few rocks in red along the Ladakh border sends wrong signals. When Indian Army Chief General Deepak Kapoor says that there have been several border violations by Chinese troops in the past few months, are we to ignore him? Can the Indian media be blamed if it interprets these events as a sign of Chinese hostility? If a couple of television channels have gone bonkers in recent times it only reflects the fears and sentiments of the average Indian. Shouldn't the Government come clean on where it stands, clearly and unequivocally, instead of constantly blaming the media? The media, surely, would be most willing to help in the process of reconciliation, if that has been worked out between Delhi and Beijing.

What is intriguing is that, judging from media reports nobody really knows where India stands. There are many ways to push India into a corner and Sino-Pakistan relations in the matter of nuclear weapons and missiles are only too well known. Also known is the fact that China has been investing huge amounts of money in countries like Nepal, Sri Lanka and Myanmar. How come we have estranged even Sri Lanka which is next door to us? When China attacked India in 1962, India felt betrayed, not just by China itself, but by its own leaders. VK Krishna Menon had to resign under ignominious circumstances and Nehru's death was hastened. The Prime Minister never was the same again. After all the India-China bhai bhai euphoria, India came a cropper. The unspoken message that the Indian media is sending is that let not there be repetition of 1962. One slap on the face is enough. Another slap may not be taken lightly.

(The writer is former editor of Illustrated Weekly and a senior columnist.)

- Organiser -

Obituary

Pyarelal Khandelwal

Veteran BJP leader and Rajya Sabha Member Pyarelal Khandelwal passed away at AIIMS in New Delhi on October 6 following a cardiac arrest. He was 84 and was suffering from cancer and age-related ailments. Born on April 6, 1929 at Charmandali village of Sehore district in Madhya Pradesh, Khandelwal came from a farmer's family. He joined the RSS in 1940 and participated in the freedom struggle. He also played an important role in the students' movement while studying in the Maheshwari School in 1942 and took part in the distribution of secret pamphlets in his early student life. He was endured punishment in the school for voicing the slogan of Vande Mataram during the freedom struggle.He became a Sangh Pracharak in 1948. He was sentenced for four months from 1948 to 1949 for observing Satyagraha demanding lifting of the ban on RSS. He participated in Kashmir Movement in 1953 . He joined the Jana Sangh in 1964 and was arrested during the Emergency in 1975 but escaped from the custody and remained underground for 19 months. He launched a prolonged movement called "Gram Raj Abhiyan" and mobilised thousands of activists in Madhya Pradesh in 1988 which helped in the election victory of the BJP in the State in 1990.

"Ranga Torana"

The Drama Festival

Bellary: Gubbi Veeranna award recipient Gudegiri Basavvaraj urged the State Government to take effective measures to preserve the theater culture. He was speaking after inaugurating "Ranga Torana" festival organized by the ABVP in Raghava Kala Mandir here on Sunday. The drama festival has been organised for three-days.

He opined that, special significance and contribution of the theatre was actively influencing people more than any other medium of communication." Ranga bhoomi has its own aura of power" he added.

He regretted that drama has lost its grip and importance in recent years because of the TV and cinema appeal the proliferation of Satelite TV channels has threatened the very existence of drama and over a score of theater groups have close down area result of the impact of such technology.

He complimented the ABVP in nurturing artistic activity through the identification of protential talent among students and giving them a platform to display their talents.

Tourism Minister G. Janardhan Reddy said that effort are being made to bring out the importance of the caltural heritage centre like Hampi, Badami, Ihole, Pattadakallu etc through programmes including drama festival. He also promised to bring to the attention of the CM the ned for edtending help to the theater artistes and companies. Drama Academy president Srinivas G. Kappanna. Shri Ravi Kumar and others also spoke on the occasion. ■

ABVP Protesters Caned in Varsity Campus

Dharwad: The police resorted to mild lathicharge on ABVP protesters on Karnatak University campus. They also took five protesters to custody and released them on bail later. The ABVP had called for a state-wide university bandh to protest against the existi[redacted] fee structure and the admission process. ABVP began the protest demonstration on the university campus around 10 am and insisted on stopping the ongoing counselling of candidates for admission to P-G courses.

The activists rushed to the senate hall, the venue of counselling, and tried to disrupt the admission process. The police pushed them out. The protesters then came to vice-chancellor's chamber to submit a memorandum. This prompted the police to resort to lathicharge to disperse the mob. Five activists were taken into custody and packed them off to suburban police station.

ABVP members rushed to the police station, condemned the police action and demanded the release of those arrested. They also demanded action again[redacted] the police officers.

Meanwhile, the activists went to police commissioner's office to press for disciplinary action against the police officers responsible for lathicharge.

The ABVP has demanded reduction of fees, changing the present counselling system for admission to P-G courses, fixing of reasonable fees for the self-funding courses, cancellation of fees for issuing eligibility certificate and reduction in fees for admission, examination and revaluation of answer scripts among others.

Santosh Devaraddi, Mahendra Kauthal and Prakash Kattimani led the protest. ■

शैक्षिक परिवर्तन : आगामी दिशा एवं योजना

अतुल कोठारी

राष्ट्रीय सहसंयोजक

शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति

2 जुलाई 2004 को शिक्षा बचाओ आंदोलन की शुरूआत हुई। अपने चार वर्षों के अल्पकाल में इसमें राष्ट्रीय सतर पर एक सजग एवं प्रभावी आंदोलन के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने में सफलता प्राप्त की है। आने वाले वर्षों में यह पूरे देश में शैक्षिक परिवर्तन के लिए एक सशक्त माध्यम बनकर उभरे – ऐसी अपेक्षा अनेक शिक्षाविद्, शिक्षक, छात्र, अभिभावक एवं आमजन के मन में है।

शुरूआत के दिनों से शिक्षा बचाओ आंदोलन ने पाठयक्रम संबंधित विकृतियों को उठाया, उनपर विभिन्न उपलब्ध माध्यमों से संघर्ष किया तथा सफलताएँ प्राप्त की। एन.सी.ई.आर.टी. इतिहास की पुस्तकों में तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत किए गये तथ्यों एवं आपत्तिजनक अंशों को चिन्हित कर उन पर देशभर में आंदोलन चलाया गया तथा न्यायालय में जीत प्राप्त किया गया। ठीक इसी प्रकार इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय (इग्नू) के पाठ्यपुस्तकों में हिन्दू देवी–देवताओं पर लिखे अति आपत्तिजनक अंशों पर संघर्ष कर सरकार को उन्हें वापस लेने पर बाध्य किया गया। मानव संसाधन विकास मंत्री को आठ दिनों के अन्दर संसद में इस संबंध में घोषणा करनी पड़ी। केन्द्र सरकार द्वारा यौन शिक्षा को विकृत रूप में लागू करने के प्रयास पर देश भर में जनजागरण एवं आंदोलन चलाया गया फलतः ग्यारह राज्य की सरकारों ने यौन शिक्षा को इस रूप में लागू करने से स्पष्ट मना कर दिया। केन्द्र सरकार भी इस पर पुनर्विचार करने को सहमत हुई। राष्ट्रीय खुला विद्यालय के पाठ्यक्रमों में देश के क्रांतिकारियों को आतंकवादी कहने पर आपत्ति दर्ज की गई। उड़ीसा के पाठ्य पुस्तकों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, भाजपा को सांप्रदायिक संगठन कहने पर आंदोलन किया गया जिससे राज्य सरकार ने इस पर कार्रवाई की।

शिक्षा बचाओ आंदोलन ने शिक्षा क्षेत्र में लोकतांत्रिक माध्यम से उचित परिवर्तन के लिए प्रयास किये हैं। विभिन्न शैक्षिक विषयों पर आंदोलन कर जन जागरण करना लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक हिस्सा है जिसे हमने अपनाया। अनेक विशयों पर देश के लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक हिस्सा है जिसे हमने अपनाया। अनेक विषयों पर देश के कानून के अंतर्गत न्यायालय में प्रयास किये गये हैं जिसका अनुकूल परिणाम भी आया है। अपने देश के लोकतांत्रिक संस्थानों का उपयोग करते हुए अनेक ज्वलंत विषयों पर भी हमारे पहल पर संसद एवं विधान सभाओं में प्रश्न उठाये गये तथा चर्चाएँ भी हुई है।

हमारा लक्ष्य विभिन्न विषयों पर धरना, जुलुस, प्रदर्शन एवं नारेबाजी करना ही नहीं है हालाँकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर जनजागरण एवं उचित कार्रवाई हेतु हम इन माध्यमों का सहारा लेते हैं। कई बार परिस्थितियाँ हमें बाध्य करती हैं। राष्ट्रीय खुला विद्यालय के पाठ्य पुस्तकों में देश के क्रांतिकारियों को आतंकवादी कहने पर हमने अधिकारियों से मिलकर अपनी आपत्तियाँ दर्ज की। अधिकारियों ने उचित कारवाई का आश्वासन दिया तथा हमने इस विषय का प्रचार भी नहीं किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम में इतिहास के पुस्तक के संबंध में हमने समाचार–पत्र एवं लीगल नोटिस देकर दो महीने का समय दिया। विश्वविद्यालय प्रशासन ने इस दिशा में कदम उठाते हुए आवश्यक सुधार किया फलतः हमने किसी भी प्रकार का आंदोलन नहीं किया। वहीं दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास की पुस्तक जिसमें हिन्दू देवी–देवताओं को अपमानित किया गया है के विषय पर बाध्य होकर हमें आंदोलन करना पड़ा।

हमारा लक्ष्य प्रचार प्राप्त करना अथवा इसके लिए आंदोलन करना मात्र नहीं है। हम शिक्षा में समाज का सहभाग हेतु समाज में जागृति लाने के लिए प्रयत्नशील हैं। अभी तक विभिन्न

विषयों पर देशभर में 700 संगोष्ठियाँ आयोजित की गई है जिनमें 1.5 लाख से भी अधिक लोगों का सहभाग प्राप्त हुआ है। यौन शिक्षा के विषय पर राज्य सभा की पीटीशन कमेटी को 41,000 पत्रांक/ज्ञापन दिये गए। अब तक 45 पुस्तिकाओं का प्रकाशन हो चुका है जो देशभर में 6000 लोगों को भेजें जाते हैं। देश के विभिन्न भागों में भिन्न–भिन्न भाषाओं मे पत्रांक बाँटे गये तथा हस्ताक्षर अभियान चलाए गये हैं। यौन शिक्षा के विषय पर आयोजित सम्मेलन में 26 संस्थाएँ साथ में आई। एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तक जिसमें लिखा था, 'जाट लुटेरे थे' पर हरियाणा में पुरा जाट समाज आंदोलित हुआ तथा विधान सभा, संसद एवं समाचार माध्यमों में विषय उठाये गये। एन.सी.ई.आर.टी के पाठ्यपुस्तक में भगवान महावीर पर आपत्तिजनक टिप्पणी पर जैन समाज अलवर जिला न्यायालय में विषय को लेकर गई एवं विजय प्राप्त की। इसी तरह आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती के विषय में आर्य समाज ने चण्डीगढ़ उच्च न्यायालय में याचिका दायर की जिसका भी सकरात्मक परिणाम प्राप्त हुआ। शिक्षा बचाओ आंदोलन के कारण विभिन्न शैक्षिक विषयों पर अनेक बार देश के संसद एवं विभिन्न राज्यों के विधान सभाओं में मामले गूँजे।

शिक्षा बचाओ आंदोलन किसी एक विशेष विचारधारा अथवा एजेंडा लेकर नहीं चल रही तथा इसका कार्य दलगत राजनीति से उपर उठकर रहा है। हम शिक्षा को देशहित एवं समाजहित में राष्ट्रीय अवधारणा के अनुरूप ढालना चाहते हैं। फलतः देश के सभी प्रकार के सामाजिक, धार्मिक, अध्यात्मिक, राजनैतिक नेतृत्व बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष रूप से इस आंदोलन से जुड़े हैं। पाठ्य पुस्तकों में व्याप्त विकृतियों के कारण भी आंदोलन की आवश्यकता सब ने महसूस किया तथा आगे भी इस प्रकार का आंदोलन चलाना पड़ेगा, इस में किसी को संदेह नहीं है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि कुछ मामलों में कार्य प्रतिक्रियात्मक रहे परन्तु इस माध्यम से व्यापक बहस एवं वाद–विवाद से जन जागरण हुआ है।

देश में एक ऐसा वातावरण बन रहा है जिसमें इसकी अत्यधिक आवश्यकता महसूस की जा रही है कि समाज–"शिक्षा के विषय में क्या हो"– इस पर चर्चा करे तथा स्पष्ट मानदण्ड निर्धारित करे। यह कार्य स्वतंत्रता के पश्चात् तुरन्त शुरू हो जाना चाहिए था परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा हो नहीं पाया। सरकार ने कोठारी आयोग, मुदलियार आयोग, राधाकृष्णन आयोग, 1986 की शिक्षा नीति आदि आयोग जरूर, इनके द्वारा अच्छे सुझाव भी आये परन्तु राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव में इनका क्रियान्वयन नहीं हो पाया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन शिक्षा क्षेत्र में आमूल चुल परिवर्तन लाने तथा समाज के समक्ष एक नया विकल्प प्रस्तुत करने के लिए किया गया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित कार्य आवश्यक लगते हैं:–

- शिक्षा के क्षेत्र में देशव्यापी जनजागरण।
- शिक्षा का हित चाहने वाले शिक्षा क्षेत्र से जुड़े छात्र, शिक्षाविद् शिक्षा को संचालित करने वाले विभिन्न संस्थानों के संचालक मंडल, सरकारी अधिकारी तथा ऐसे लोगों को इस प्रक्रिया में सम्मिलित कर, सक्रिय एवं संगठित करना।
- एक नए विकल्प की तैयारी शुरू करना।

ये प्रयास विकेन्द्रित एवं देशव्यापी होना आवश्यक है। इस हेतु विभिन्न विश्व विद्यालयों, संस्थानों, सामाजिक संगठनों द्वारा शिक्षा के पाठ्यक्रम, व्यवस्था, नीति आदि के लिए नए मानदण्डों एवं विकल्प तैयार करने का प्रयास करना होगा। साथ–साथ यह भी आवश्यक है कि केन्द्रीय स्तर पर देश भर के शिक्षाविदों द्वारा शिक्षा परिवर्तन हेतु कार्य योजना तैयार हो। इस हेतु सेमिनार, संविमर्श, संगोष्ठी, परिचर्चा परिसंवाद आदि आयोजित करना तथा पाठ्य–पुस्तक एवं साहित्य तैयार करने का कार्य हमारी प्राथमिकता होगी। इस प्रयास के द्वारा तैयार की गई पुस्तक विभिन्न प्रकार के व्यवस्था के मॉडल एवं नीति के दृष्टि से दिशा निर्देश, देश के सभी निजी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्व विद्यालय तथा विभिन्न सरकारें स्वीकार कर क्रियान्वित करे– इसके लिए प्रयास करना होगा। इन सभी प्रयासों में देशभर के शिक्षाविद्, शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले विभिन्न संगठन, प्रत्यक्ष कार्य करने वाली सामाजिक–आध्यात्मिक–धार्मिक संस्थाएँ, शिक्षा का हित चाहने वाले विभिन्न प्रकार के व्यवसायी एवं राजनीतिक नेतृत्व का सहयोग प्रमुख रूप से अनिवार्य है। शिक्षा को देश के अंतिम से प्रथम प्राथमिकता का विषय बनाना होगा।

इन सारे प्रयासों के माध्यम से देश की शिक्षा की विकृतियाँ एवं गलत बातों का ज्ञान–विज्ञान को आधुनिक संदर्भ में परिभाषित कर देश के शिक्षा को पाश्चात्य प्रभावों से मुक्त करने का प्रयास करना पड़ेगा। शिक्षा में विकल्प की तैयारी के साथ–साथ भारतीय भाषाओं को पुनः स्थापित करने कार्य भी अति आवश्यक हैं। अब्दुल कलाम की 2020 की विकसित भारत की कल्पना शिक्षा के माध्यम से ही भौतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धि द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

होम मैनेजमेंट में कैरियर

प्रीति पाण्डेय

अतिथियों का पूरा–पूरा ध्यान रखना और हर उस बात का ख्याल रखना, जो आपके घर की पहचान को एक नई पहचान में तबदील करती है। ऐसी खूबी आजकल हर कोई अपने आप में देखना चाहता है और फिर क्यों न हो आजकल डिमांड ही इन्हीं सब चीजों की है। शायद इसी डिमांड ने एक नए कैरियर को भी जन्म दिया है और वह है होम मैनेजमेंट। आइये जानते हैं होम को मैनेज करते–करते आप कैसे अपने कैरियर को भी मैनेज कर सकते हैं।

चूंकि यहां बात होम की हो रही है, इसलिए होम का मतलब यहां आपके घर के अलावा कॉर्पोरेट होम व अन्य होम से भी है। जाहिर है कि यदि आप अपने घर को अच्छी तरह से मैनेज करना जानते हैं तो यकीनन आपको इस क्षेत्र में कार्य करने में कोई परेशानी नहीं होगी। हाँ यह बात पक्की है कि यहां आपके कार्य करने का तरीका जरूर बदल जाएगा। जहां आप घर में सभी चीजे स्वंय करते हैं यहां आपको चीजों को मैनेज करवाना होता है वो भी एक अच्छे सिस्टम के साथ। किसी कम्पनी के प्रबंधकीय टीम का हिस्सा बनकर आपको आपके प्रोफेशन के हिसाब से ही उस कम्पनी नामक होम को मैनेज करना होगा। वहां काम करने वालो से वहां आने वालों अतिथियों का ख्याल रखना आपकी जिम्मेंदारी होगी।

इन सभी चीजों को ध्यान में रखते हुए गृह व्यवस्था की सेवाओं की मांग आजकल बढ़ रही है। इस बढ़ती मांग के साथ इस क्षेत्र में गैर सरकारी संस्थाओं की मांग भी कई गुना बढ़ गई है।

क्या है गृह व्यवस्था?

इस विभाग में नौकरी करने का अर्थ निरतर श्रम करना है, जिसका फल भी मिलता है। इस नौकरी में व्यक्ति को फर्श साफ करने से लेकर परदे बदलने तक के सभी कार्यो के बारे में पूरा ज्ञान होना चाहिए चूंकि आप दूसरों से तभी काम ले सकते हैं जब आपको उस काम का ज्ञान हो।

यदि यह कहा जाएं कि गृह व्यवस्था ग्राहक की सेवा से संबंधित कार्य है, जहां ग्राहक या अतिथि की संतुष्टि एंव आनंद को प्राथमिकता दी

जाती है। सामान्य दृष्टि से देखें तो यही अर्थ निकलता है कि घर को सर्वोत्तम ढंग से व्यवस्थित रखा जाए। स्वच्छता विश्व स्तरीय हो और अत्यधिक व्यवस्थित ढंग से कार्य किए जाएं।

कार्य

विभाग के शीर्ष पर हेड अर्थात कार्यकारी गृह प्रबंधक होता है, उसके बाद सहायक कार्यकारी होते हैं। सहायक कार्यपालक अर्थात कार्यकारी के अधीन गेस्ट रिलेशंस सुपरवाइजर होते हैं। ये सुपरवाइजर गृह व्यवस्था प्रशिक्षणार्थियों तथा गृह व्यवस्था परिचारकों के प्रभारी होते हैं। ये परिचारक तथा प्रशिक्षाणार्थी ही सोफासाफ, दरजी, पॉलिश करनेवाले, बढ़ई, पेंटर आदि जैसे विभाग के शेष स्टाफ से कार्य करवाने के लिए जिम्मेदार होते हैं।

गृह व्यवस्थापक के गुण

गृह व्यवस्था के अच्छे कर्मचारी बनने के लिए यह जरूरी नहीं है कि आप में सफाई करने की धुन हो। जरूरत इस बात की है कि आपका व्यक्तित्व शांत और स्पष्ट दृष्टिकोण वाला हो। इसके अलावा आत्मविश्वास और दूरदर्शिता जैसे गुणों का होना आपके काम में चार चांद लगा सकता है। व्यक्ति को परिश्रमी होना चाहिए तथा हर ब्योरे पर नजर रखनेवाला भी।

संबंधित पाठ्यक्रम

आप दो प्रकार से इस विभाग में शामिल हो सकते हैं। एक तरीका यह है कि होटल प्रबंधन में तीन वर्ष का डिप्लोमा करने के बाद यह विभाग चुने। दूसरे आप बारहवीं या स्नातक करने के बाद केवल इसी विभाग से संबंधित डिप्लोमा कर सकते हैं। ऐसे डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि छह से बारह माह तक होती है। सभी व्यावसायिक संस्थानों में ये पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

योग्यता

होटल प्रबंधन पाठ्यक्रम में आवेदन करने के लिए आपके पास बारहवीं या स्नातक स्तर पर 50 प्रतिशत अंक होने चाहिए। प्रवेश परीक्षा के आधार पर दाखिला दिया जाता है। इस परीक्षा में उम्मीदवार का अभिवृति तथा सामान्य ज्ञान की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाता है।

कहां कर सकते हैं जॉब

आप इस पाठक्रम को करने के बाद व्यावसायिक घरानों , अस्पताल और बड़े–बड़े संगठनों में गृह पालकों के तौर पर कार्य कर सकते हैं। यदि आपके पास पर्याप्त अनुभव है और आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी है तो आप अपनी कम्पनी खोल सकते हैं। अन्यथा आप प्रबंधकीय स्टाफ के सदस्य के रूप में किसी निजी संगठन में शामिल हो सकते हैं।

वेतन

यदि आप ट्रेनिंग पीरियड में हैं तो आपको आराम से 5000–7000 मासिक वेतन मिल सकता है और उसके बाद आप किसी भी निजी संगठन में वहां के गृह पालक के रूप में आराम से 10,000 से 15000 तक कमा सकते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस कंपनी में नौकरी कर रहे हैं। ■

7 ABVP Activists Injured in Lathicharge

NIZAMABAD: Seven activists of Akhila Bharatiya Vidyarti Parishad were injured in a police lathi-charge that took place outside the district collectorate in Nizamabad town. Police used mild force to pacify the agitating mob when they tried to forcefully enter the collectorate by scaling the closed entrance gates.

The protest was part of the statewide agitation by the organisation highlighting the problems pertaining to education sector. About 1,000 ABVP activists gathered at Rajiv Gandhi auditorium at 10.30 am and took out a rally to the collectorate where they staged dharna for one hour. The latihcharge took place when the students attempted to scale the gates. ■

जल्दबाज मंत्री और परीक्षा सुधार

आशीश कुमार 'अंशु'

2010 में लगभग 8 लाख छात्र बोर्ड परीक्षा देंगे लेकिन अब उन्हें अंकों के स्थान पर ग्रेड मिलेगा। इन आठ लाख बच्चों के अभिभावकों और शिक्षा विषय से जुड़कर काम कर रहे कार्यकर्ताओं के सामने यह सवाल अहम है कि क्या साल की जगह सेमेस्टर, अंकों के स्थान पर ग्रेड, और बोर्ड के स्थान पर साल भर चलने वाली मूल्यांकन की सतत और समग्र मूल्यांकन नामक नई व्यवस्था सीसीई; कॉन्टीन्यूअस कॉम्प्रीहेन्सिव इवैल्यूशन मिलकर बच्चों के मन से परीक्षा का खौफ मिटा पाएंगी?

सवाल तो यह भी है कि ग्रेड के साथ–साथ अंकों में रिजल्ट पाने की छूट पहले की तरह बहाल रहेंगी फिर गलाकाट प्रतिस्पर्ध से उपजा तनाव कहां कम होगा?

अपने 100 दिन के एजेंडों के वादे के मुताबिक मानव संसाधन विकास मंत्री एक तुगलकी फरमान ले आए, परीक्षा सुधार का। इन सुधारों पर ना पूरी तरह बहस हुई ना आम राय ली गई। देश के महानगरीय, शहरी, ग्रमीण और अत्यंत पिछड़े इलाकों के स्कूलों के लिए भी एक ही पैटर्न वे लेकर आए। बोर्ड परीक्षा को वैकल्पिक बनाने के मुद्दे पर दिल्ली के सभ्रांत स्कूलों में सहमति दिखी। इस मुद्दे पर राज्यों के तीखे विरोध के बाद परीक्षा सुधर सीबीएसई; सेन्ट्रल बोर्ड फॉर सेकेन्डरी एजुकेशन, तक सिमट गई है। वैसे केन्द्रिय दसवीं बोर्ड परीक्षा 2011 से पूरी तरह खत्म होने वाली है। जबकि 2010 में बोर्ड परीक्षा तो होगी लेकिन अंकों के स्थान पर ग्रेड दिया जाएगा। अब ग्रेडिंग के साथ–साथ यदि छात्र चाहें तो उनका रिजल्ट अंकों में भी बतया जाएगा। और दूसरे स्कूल में दाखिले के लिए दसवीं पास के सर्टिफिकेट की जरूरत पड़ती है तो उसकी मांग पर लिखित परीक्षा हो सकती है। यह परीक्षा इंटरनेट के जरिए ऑन लाइन भी दी जा सकती है।

शिक्षा बचाओ आंदोलन से जुड़े शिक्षाविद अतुल भाई कोठारी के अनुसार – कपिल सिब्बल द्वारा परीक्षा सुधार के नाम पर जो किया जा रहा है। इसमें 100 दिन के एजेंडा का वादा पूरा करने की जल्दबाजी अधिक दिखती है। यदि इस सुधार में कुछ अच्छाईयां हैं तो कमियां भी कम नहीं। श्री कोठारी के अनुसार सिब्बल को इस संबंध में शिक्षा क्षेत्र में काम कर रहे संगठनों से चर्चा करनी चाहिए थी।

खुद पर जल्दबाज मंत्री का लेबल लगने और उनके सुधारों पर उठ रहे सवाल से सिब्बल भी बेखबर नहीं हैं। इसलिए अपने सुधार के पक्ष में उन्होंने प्रेस को कहा– 'साल में एक दिन परीक्षा के आधर पर जिन्दगी का फैसला करने के बजाय साल भर पढ़ने सीखने और परखने की व्यवस्था लागू की जा रही है। निश्चित तौर पर यह बोर्ड के हौव्वे को कम करेगी।'

उनकी नई व्यवस्था हौव्वे को कितना कम करेगी, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा, लेकिन जल्दबाज मंत्री जी अपने सुधारों पर उठ रहे सवालों से कैसे बचकर निकलते हैं, यह सवाल इस वक्त अधिक अहम है।

ABVP Protest Against Chinese Incursion

Coimbatore: Activists of ABVP staged a demonstration in Coimbatore against the alleged incursions by the Chinese army into Indian territory.

Activists of ABVP gathered in city headquarters with banners and placards and demanded central government to take steps to protect the country from Chinese aggression.

Officials sources have said that Chinese troops entered nearly 1.5 kilometres into the Indian territory near Mount Gya, which is recognised as the international border by India and China, and painted the word 'China' in Cantonese on the boulders and rocks there with red spray paint. The incursions were reported from the area generally referred in the Chumar sector in east of Leh.

The border patrol discovered the red paint markings on various rocks and boulders along the Zulung La (pass) on July 31 and the Chinese had entered into the area and written "China" all over the place, the sources said.

Indian soldiers later erased the text, writing 'India' instead.

अभाविप ने किया प्रतिभावान छात्रों का सम्मान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, अम्बाला (हरियाणा) इकाई द्वारा गत दिनों 109 प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित किया गया। इन सभी विद्यार्थियों ने अपने–अपने विद्यालय में शिक्षा, खेल, संगीत आदि विषयों में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

अम्बाला के जी.आर.एस.डी विद्यालय में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंम्बेकर मुख्य वक्ता तथा शिक्षाविद् डा. एच.बी. मुंजाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रतिभावान छात्रों को सम्बोधित करते हुए श्री आंम्बेकर ने कहा कि भारत प्रतिभाओं का धनी है। इन प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने का कार्य अभाविप कर रही है। उन्होंने कहा कि देश के विकास में छात्रों की बहुत बड़ी भूमिका है, इसलिए देश के छात्र को सही दिशा देना बहुत जरूरी है। देश की सुरक्षा मात्र सीमाओं तक ही नहीं, बल्कि देश के कोने–कोने का सुरक्षित होना बहुत जरूरी है। विद्यार्थी परिषद् का अर्थ बताते हुए श्री आंम्बेकर ने कहा कि विद्यार्थी परिषद् यानी– 'एक आंदोलन देश के लिए' इसलिए जिन लक्ष्यों को लेकर विद्यार्थी परिषद् की स्थापना हुई थी, उन्हें वह लगातार प्राप्त कर रही है। आज विद्यार्थी, परिषद् के बैनर तले इकट्ठा ही नहीं हो रहा, बल्कि अपनी आवाज भी बुलन्द कर रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षाविद् डा. एच.बी. मुंजाल ने परिषद् के कार्य से छात्रों को जुड़ने का आहवान किया। कार्यक्रम में 18 विद्यालयों के 109 प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष डा. मदन गोयल, प्रदेश संगठन मंत्री श्री श्रीनिवास, राज्य विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष फकीरचंद अग्रवाल सहित अनेक गण्यमान्यजन उपस्थित थे। ■

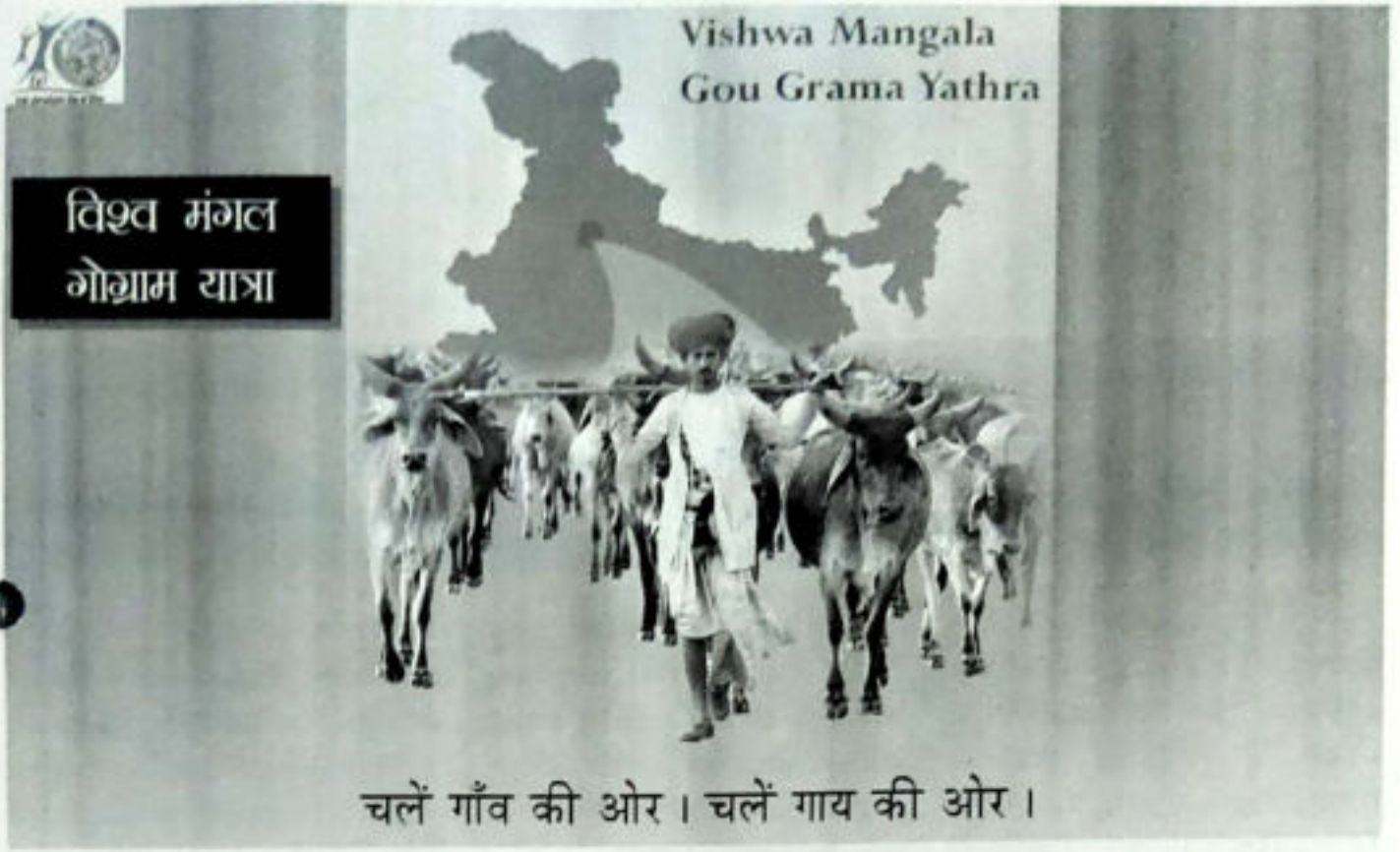

विश्व की आत्मा भारत है और भारत की आत्मा गांव – केदिलाय

हरदोई–विश्व की आत्मा भारत है, भारत की आत्मा गांव है, गांव की आत्मा किसान है और किसान की आत्मा गाय है इसलिए गाय विश्व कि आत्मा है और जानवरों कि जान हैं। यह विचार विश्व मंगल गोग्राम यात्रा के हरदोई आगमन पर आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री सीताराम केदिलाय ने व्यक्त किये।

उन्होंने बताया कि भारत पश्चिमी देशों के अनुकरण से विकास के नाम पर विनाश की ओर जा रहा है। हमने अपने जल, वायु, और जमीन प्रदूषित कर दिये परिणामस्वरूप नयी पीढ़ी ओज–तेज विहीन हो रही है। अब हमें पुनः ग्राम की ओर, गाय की ओर जाना आवश्यक हो गया है। ग्रामराज्य से ही रामराज्य आ सकता हैं।

वृंदावन के मानस मर्मज्ञ संत अतुलकृष्ण भारद्वाज ने कहा समाज का नेतृत्व करने वाले लोगों, विप्रों और संतों को जागकर समाज को जगाने का कार्य करना चाहिएं। जब–जब देश पर संकट आया इन्ही नेतृत्वकर्ताओं ने समाज का जागरण कर चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बनाया। समाज की समस्याओं का समाधान ग्रामीण स्तर पर ही मिल बैठकर करें और शासन पर निर्भरता का त्याग करे।

उन्होंने बताया कि गोमूत्र केवल दवाई ही नहीं स्वयं डाक्टर है क्योंकि गोमूत्र शरीर की किसी एक बीमारी के लिए काम नहीं करता अपितु शरीर में जाकर रोग को ढूंढकर ,रोगाणु को नष्टकर हमें स्वस्थ बनाता हैं। जिस अग्रेजी दवा का उपयोग डाईबिटीज के लिए किया जाता है उसका प्रयोग ब्लडप्रेशर के लिए नहीं किया जा सकता हैं। लेकिन गोमूत्र का प्रयोग तो सभी रोगो में किया जा सकता हैं। चौरासी लाख योनियों में से केवल गाय का मूत्र ही पवित्र माना गया हैं जिसका उपयोग प्रत्येक शुभ कार्य में होता हैं। गाय के गोमूत्र, गोबर, दूध, दही और घी से निर्मित पंचामृत व पंचगव्य का पान तो स्वयं भगवान श्री कृष्ण भी करते थे ।

जबलपूर के संत परमात्मानन्द सरस्वती ने बताया कि भारत में पहला कत्लखाना सन् 1760 में अंग्रेजों ने खुलवाया था, सन् 1947 तक इनकी संख्या 300 हो गयी थी। धीरे–धीरे कत्लखानों की संख्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने बड़ी संख्या में उपस्थित नागरिकों को गो रक्षा का संकल्प कराया।

विश्व मंगल गोग्राम यात्रा के राष्ट्रीय सचिव श्री शंकरलाल को अब तक कराए गये 2 लाख हस्ताक्षर सौंपे गये। जानकारी हो कि हरदोई जनपद में 4 उपयात्राऐं निकलीं और 50से अधिक सभाओं का आयोजन किया गया। आयोजकों द्वारा समाज में भारी उत्साह देखते हुए लोगों द्वारा बड़ी संख्या में हस्ताक्षर किये जाने का विश्वास व्यक्त किया गया।

A JIHAD FOR LOVE

ABVP raises storm in JNU with posters of 'Love' in the name of Jihad

The Jawaharlal Nehru University is a buzz with a term imported from the Kerala High Court: 'Love Jihad', states a pamphlet released by the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) in the campus.

It has spurred three protest marches since, besides many responses through pamphlets, posters and blog posts, and has forced the university administration to step in.

"The allegation that Muslim men entice Hindu and Christian women into marriage for reasons other than love, as part of an Islamist conspiracy, has recently been investigated by the Kerala Police and has brought out some ugly details," the pamphlet said.

The Indian Express had on October 1 reported that Justice K T Sankaran of the Kerala High Court had directed the state police and the Union Home Ministry to probe the alleged movement called 'Love Jihad', under which young Muslim men allegedly target college girls for conversion by feigning love.

"The pamphlet was prepared with inputs from our state unit," ABVP national executive member Amit Singh said. "This problem is not particular to Kerala. There are such people in every lane and bylanes — even in this campus, there have been such instances, though none talks of it in the open."

He said, "We are planning to create awareness on the issue because we know girls in Delhi and Maharashtra have been targeted. But we do not think any organisation is involved — most people work individually."

The pamphlet claims 4,000 girls have been converted by now.The pamphlet has also attracted attention of the authorities. In a circular dated October 16, Associate Dean of Students Sachidanand Sinha warned that such pamphlets are likely to affect life in the campus. "This is to appeal everyone that individuals, organisations or groups must refrain from issuing pamphlets and such material that may be construed as insensitive and disrespectful to the religious or social values of various segments living on the campus," the circular read.

The responses came in just as fast, in true JNU fashion. "In depicting the Muslims of this country as bloodthirsty, vicious demons with an systematic agenda of luring Hindu women, ABVP is merely following the footsteps of their fascist founding fathers," said a poster signed by over 40 students.Another poster, signed by 10 "concerned students" said, "This offensive pamphlet has a multi-dimensional attack, targeting both men and women across religions." ■

छात्र संघ चुनाव

गौरव शर्मा

इस वर्ष अभाविप ने पं. बंगाल, हिमाचल, केरल, उत्तरांचल में हुए छात्र संघ चुनावों में शानदार विजय प्राप्त की है।

दिल्ली

दिल्ली विश्वविद्यालय में अभाविप ने इस बार भगवा लहराया। डूसू उपाध्यक्ष कृती वडेरा 2543 मतों से विजय प्राप्त की। इस छात्र शक्ति के निर्णय ने जमीन पर काम करने वाले संगठन को स्वीकार करके कुकुरमुत्तों की तरह आने वाले छात्र संगठनों को जमीन दिखा दी है।

पश्चिम बंगाल

अभाविप ने इस वर्ष पश्चिम बंगाल में 16 महाविद्यालयों में चुनाव लडा। वहाँ पर 110 सीटों पर हमारे कार्यकर्त्ता चुनाव लड़े जिसमें 42 स्थानों पर हमने विजय प्राप्त की। कोलकाता में हेस्टींग हाउस बी.एड महाविद्यालय महत्वपूर्ण सरकारी महाविद्यालय है। जिसमें अभाविप की प्रदेश मंत्री पारूल मंडल छात्रसंघ सह सचिव के पद पर चुनाव जीती है। बागडोगरा महाविद्यालय मे मेग्जीन सेक्रेट्री एवं कालीनगर महाविद्यालय, दक्षिणी 24 परगना में अभाविप की पूरी युनियन आई है। प्रान्त में अधिकतम महाविद्यालयों में चुनाव नहीं हुए है।

केरल

केरल में 101 महाद्यिालयों में चुनाव हुए जिसमें सामान्य पदों (General Seats) के लिए 50 सीटों पर एवं छात्रसंघ (College Union) के लिए 6 स्थानों पर विजय प्राप्त हुई है महात्मागांधी महाविद्यालय, V.T.M. महाविद्यालय, अयप्पा महाविद्यालय, N.S.S. College, गुरूवायुरप्पन महाविद्यालय, एवं संस्कृत महाविद्यालय में विजय प्राप्त हुई है। विश्वविद्यालय छात्र परिषद (University Union Councilors) के लिए केरला विश्वविद्यालय में 14 सदस्य, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय में 5 एवं कालीकट विश्वविद्यालय में 4 सीटों पर अभाविप के प्रतिनिधि चुनकर आये है। Polytechnic में जनरल सीट पर 21 व युनियन 2 स्थानों पर चुनकर आयी है।

उत्तरांचल

उत्तरांचल में अभाविप ने 50 महाविद्यालयों में चुनाव लडा। जिनमें 27 महाविद्यालयो में छात्रसंघ अध्यक्ष एवं 33 स्थानों पर सचिव के पद पर विजय प्राप्त की है। PGDAV महाविद्यालय देहरादुन में अभाविप ने लगातार तीसरी बार विजय प्राप्त की है। विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि (University Repersentetive) 24 जीतकर आये है। गढ़वाल विश्वविद्यालय में महासंघ की सभी सीटों पर अभाविप ने जीत दर्ज करवायी है। ■

ABVP wins in Himachal Pradesh

ABVP wins majority of the college seats in Himachal Pradesh. ABVP achieved first position in students' union elections held. The Parishad won 225 seats. It is regularly for the tenth time that the ABVP achieved first position in the state. According to Shri Umesh Dutt, national secretary, ABVP won 54 posts of president, 57 posts of vice president, 57 posts of general secretary and 57 seats of joint secretary. The colleges in which the full ABVP panel won included Rikangpio, Seema, DAC College (Kotkhai), Government Sanskrit College (Kyartu), Sanskrit College (Shimla), Sangdah College, Una College, Beaton College, Bangan College, Chintpurni College etc.

ABVP Plans Contact Programmes With Students

ABVP which is stepping in to its 60th year of inception this year, will organize contact programmes with students across India. This programme will be held across the country in the form of informal meetings with students, academicians and others concerned from October 2 to 11.

ABVP would contact students in all colleges across the country, meet them in their hostels, or homes and hold discussions with them on issues pertaining to the student community. "The contact programmes will focus on environmental and communal harmony aspects,". The programme will be held in district and taluk centres to keep students abreast of latest developments.

ABVP will also bring out two booklets - `ABVP 60 - A campaign for the nation', and 'ABVP Ideological Campaign' as part of the programme.

ABVP Sweeps Hyderabad University Election

ABVP got a memorable victory in the Hyderabad Central University elections held on 09th Oct 2009.Chaitanya Prasad elected as President with a margin of 245 votes, Shashank ujar Barva elected as Vice President with a margin of 138 votes,, Kum.Priya elected as Cultural Secretary , Sardar.Jagagjith singh elected as Sports Secretary. Shiva Krishna pursuing his MTech and K.N.Rakesh doing his PG were elected unopposed as general secretary and joint secretary respectively. ABVP Cadres celebrated the victory in the campus.

Jehad's New War-Love Bombs, Islamic Bank

For long, the RSS and the ABVP has been warning the 'Hindu society' of Kerala, that NDF's (jehadi outfit) student wing 'Campus Front' has been entrusted the task of luring Hindu college girls into the love web and eventual conversion to Islam and jehadi terror network. IB and RAW has also been warning of more women, forthcoming to become 'Human Bombs'.

Malayala Manorama on its August 31st issue revealed startling Police investigations of jehadis using money, flashy cars, dresses, etc. to lure 'Hindu Girls', into love, marriage, conversion and eventual disappearance or transportation to Kashmir for jehad. The police report says that almost 500 Kerala girls have gone missing during the past two years. Even now 30 'girl missing' cases are registered in police stations across Kerala every month. National media reports that almost 4,000 girls are missing every year.

Now added, is the threat of a Gulf NRI promoted 'Islamic Bank' with the active backing of CPM. This bank is a cover for jehadi operations like money laundering, Pak printed counterfeit currency flowing into India, pipe money operations, drug trafficking, arms buying, jehadi blasts, and active intervention in stock markets. The CPM will get 'throw away bone pieces' for licking.

The women's organisation like the Mahila Morcha, the Hindu Aikya Vedi, etc. have called for central probe into the mysterious disappearance of Hindu girls and the VHP leader Kummanam Rajasekharan has called for banning of Islamic Bank.

ABVP CREATES HISTORY

Save Kashmir Movement

Rally of more than 10,000 students at Jammu on Sept. 11,1990

1990
Kashmir March

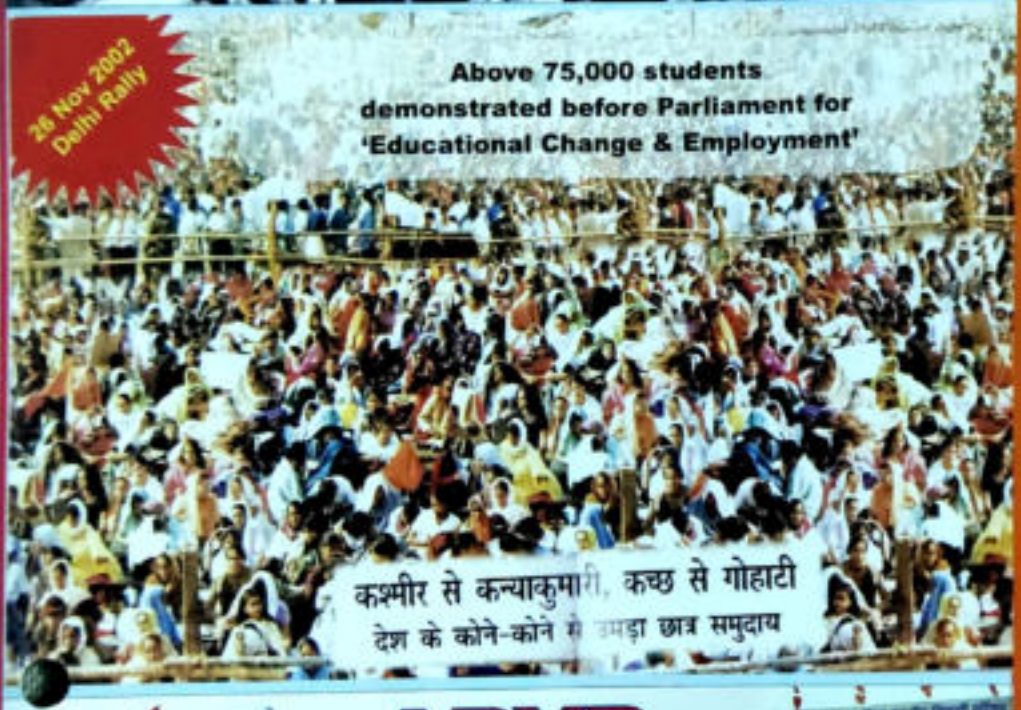

2002
Delhi Rally

2008
Chalo Chicken Neck

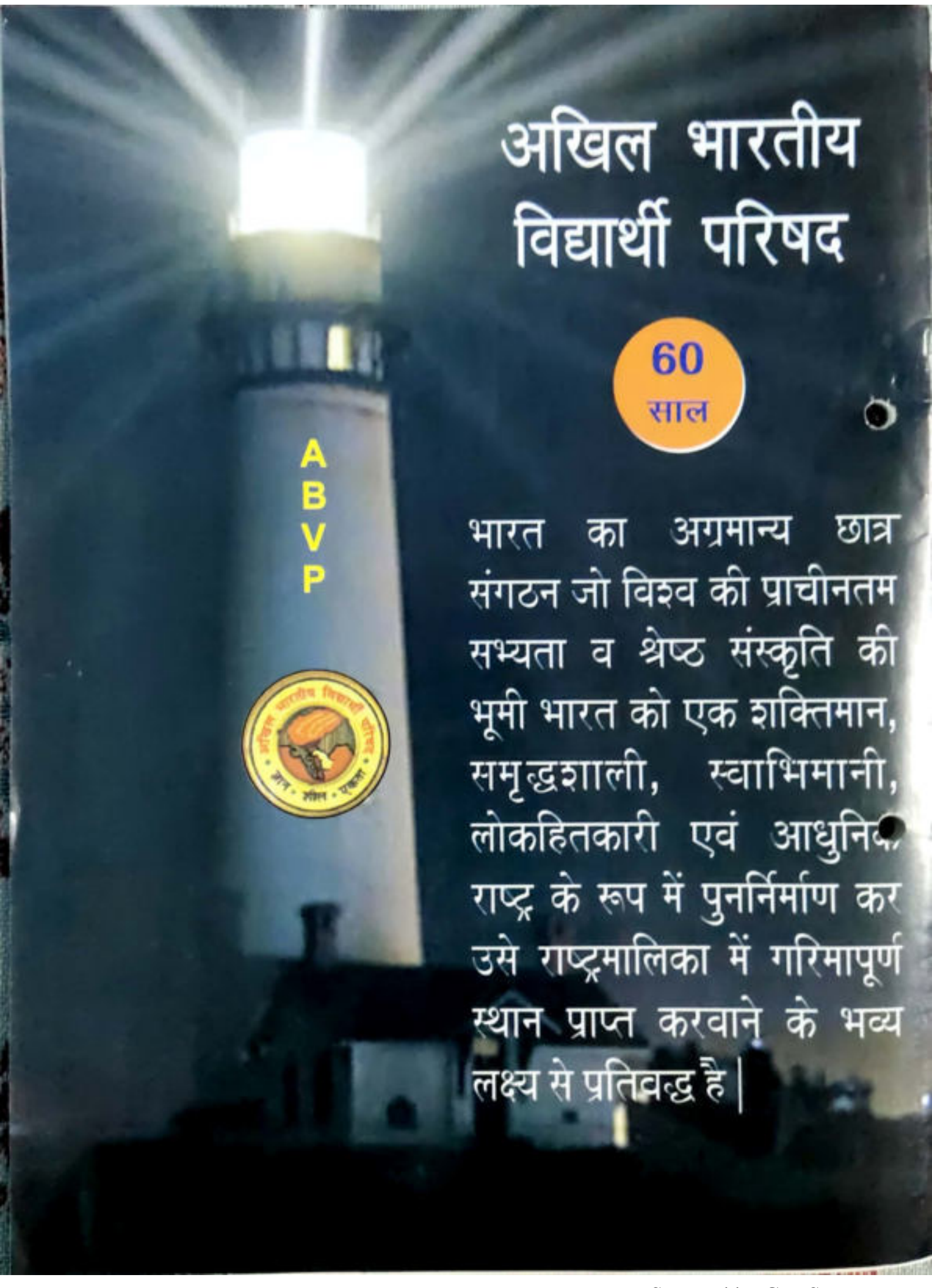

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

60 साल

ABVP

भारत का अग्रमान्य छात्र संगठन जो विश्व की प्राचीनतम सभ्यता व श्रेष्ठ संस्कृति की भूमी भारत को एक शक्तिमान, समृद्धशाली, स्वाभिमानी, लोकहितकारी एवं आधुनिक राष्ट्र के रूप में पुनर्निर्माण कर उसे राष्ट्रमालिका में गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त करवाने के भव्य लक्ष्य से प्रतिबद्ध है|